ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

भोजपुरी साहित्य सरिता

जनवरी 2023, वर्ष 6, अंक 10

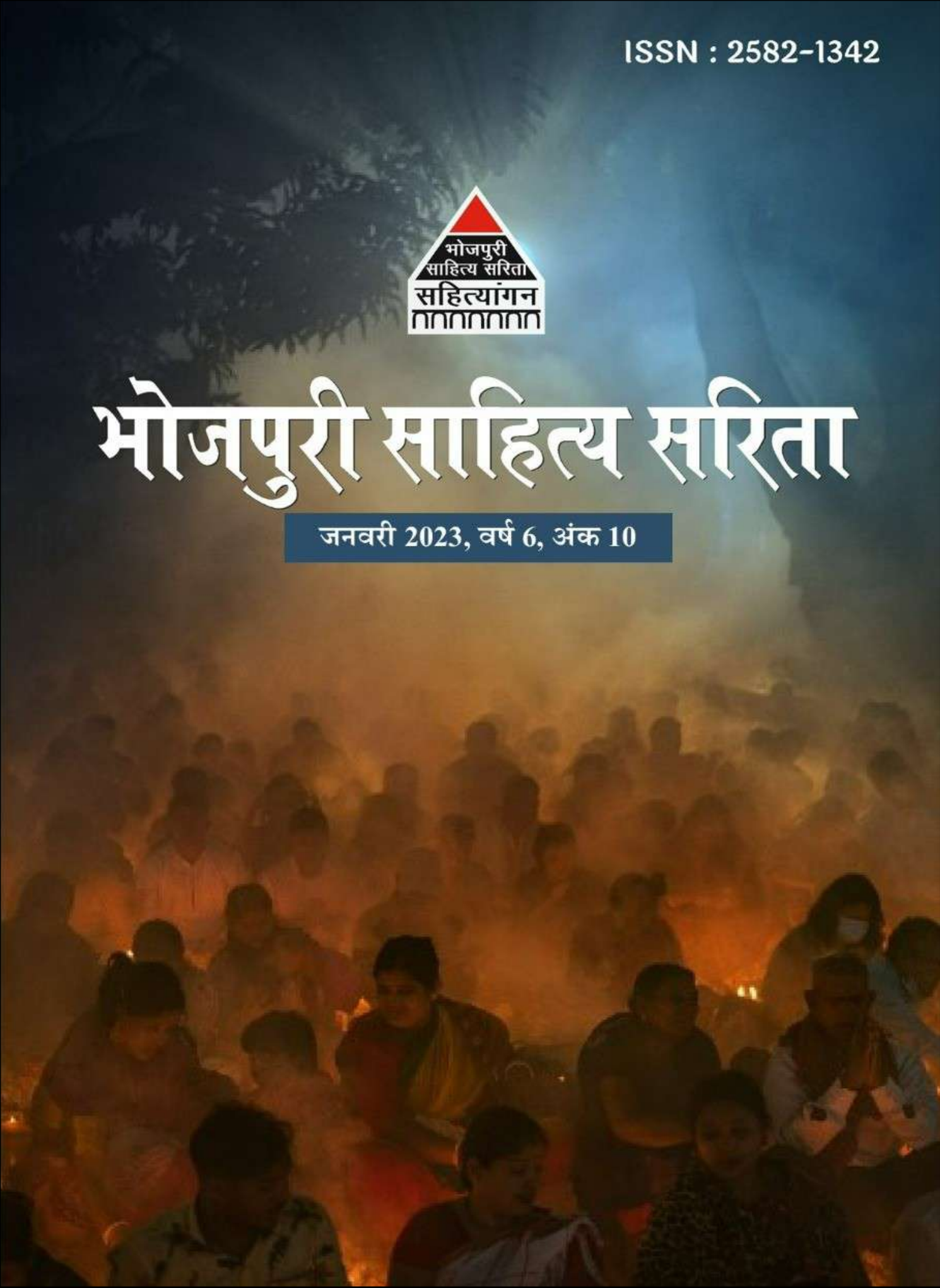

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518

CNS
Network Services

CompuNet Solution

COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING

GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates

K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559

बुकिंग मात्र
11000 में

FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू

2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू

FREE HOLD PLOTS
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा

Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.

Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution

CNS
Network Services

Service
AMC

Email: support@compunetsolution.in | web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
अशोक श्रीवास्तव (गाजियाबाद)
अनामिका वर्मा (भोपाल)

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय
(दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
कुलदीप श्रीवास्तव (मुंबई)

तकनीकी एडिटिंग–कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र सहयोग

आशीष पी मिश्रा (मुंबई)

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)
गुलरेज़ शहज़ाद (दक्षिण बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्यगण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची), डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

• संपादकीय
आपन बात–डॉ रजनी रंजन /5

धरोहर
पूरबी–राधा मोहन चौबे 'अंजन'/6

• आलेख/ शोध-लेख/निबंध

जीवन के परम सच्चाई के खोज–
डॉ मयंक मुरारी/19–20
लोक के बैदई करत सरक्त आइल सकरात–
शशि रंजन मिश्रा/25–26
टिकुरी से बहावल अंखिए बर रहल बा–
डॉ बलभद्र/26–27
भोजपुरी लोकगीतन के सहेज के मारीशस बना
देले बा यूनेस्को के धरोहर– मनोज भावुक/41–42
जनम के उछाह में सोहर के सरसता–
केशव मोहन पाण्डेय/42–46

• कहानी/लघुकथा/ रम्य रचना
भीखम के माई–डॉ रजनी रंजन /21–22
बदला–सौरभ भोजपुरिया/23–24
धिया हो धिया ना कम खइह, ना गम खइह
- बिम्मी कुंवर/40

• कविता/गीत/गजल

परदेसिया–सन्नी भारद्वाज/12
बुझाते नइखे– रत्नेश चंचल/13
शराबी एक दम ना ह – दीपक तिवारी/13
चटकल दीयना–देवेन्द्र कुमार राय/13
कलुआ अउर ठारी–लाल बहादुर चौरसिया लाल'/14
गजल–विद्या शंकर विद्यार्थी/14
परधानी–योगेंद्र शर्मा 'योगी'/15
आ जइतू ए बरखा– बिमल कुमार/15
गजल–भालचंद त्रिपाठी/15
खेत– सविता गुप्ता/16
गीत–कृष्ण देव घायल/16
गजल–अजय साहनी/16
कइसन जाड़ ई आइल बा– डॉ ज्ञानेश्वर गुंजन'/17
माटी के बा देहिया– गीता चौबे 'गूंज'/17
का कहीं कुछू सोहात नइखे– अशोक मिश्र/29

• कविता/गीत/गजल

नवहा वर्णन– संजीव कुमार त्यागी/18
रोक सकअ त रोकअ बबुआ–विवेक त्रिपाठी/24
गंगिया–कनक किशोर/28–29
आदमी से डर रहल बा आदमी– अंकुश्री /34
खेतिहर–जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/34
हदस–दिनेश पाण्डेय/35
ई गीत देखे– सोनी सुगंधा/36
जन गण मन दोहराइले– वीणा पाण्डेय
'भारती'/36
गीत– राकेश कुमार पाण्डेय/36
भइया मलहवा रे –रमापति रसिया/37
गजल–जगदीश खेतान /37
तीन कविता– डॉ राजीव उपाध्याय/39

• पुस्तक समीक्षा-चर्चा

आखर आखर गीत आ भोजपुरिहा तड़का–
विजय कुमार तिवारी/9–12
पाहुर में श्रीकृष्ण के आदर्श मैत्री चरित्र– डॉ ब्रज
भूषण मिश्र/30–32
बनचरी : एक नजर– मीनाधर पाठक/38

• यात्रा वृत्त/रितोर्पाज

बोले में लजाइब त बिला जाइब–
रवि कुमार 'सूरज'/33

• संस्मरण/ साक्षात्कार

ठकुरान के ठसक– जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/7–8

साहित्य समाचार/ 38

■■

आपन बात

नया नया साल में बहुत कुछ बदलाव देखे के मिलल बा। कोविड महामारी तऽ दू साल आदमी के जिंदगी के कम कऽ देलस। आदमी के सोचल सब काम ठप्प पड़ गइल। बाकिर भगवान के बनावल जीव जगत के इहे तऽ खासियत बा कि तनी सा नेह मिलते हरियरा जाएला।
आज धरती पर लोग सब भुला के फेर से जी उठल बा। सभे अपना जिनगी के हिसाब राखत आपन काम कर रहल बा। मरकिनौना कोरोना के फेर हल्ला सुनि के तनी–तनी मन बदल रहल बा। ऊ दहशत आँखिन से बिसरत नइखे। पर डेराये के नइखे। जइसे हर बार अइले आ गइले ,ओइसहीं अबरियो आ के चल जइहें। बस आपन बचाव खातिर मूल तइयारी अबहियें से शुरु कऽ देवे के बा। विशेष रुप से साफ सफाई ,मुँहझपना,हाथक्षालक आ साबून से हाथ बार बार धोवत रहे के बा । अपना के सर्दी के प्रकोप से बचावे के बा।

लेखनी के बड़ी ताकत ह।ई सभ अनेशा,सांच आ भविस खातिर आपन बात ,मनई के हाथे लिखवाइये लेवेले। एही में मनई आपन पीड़ा, खुशी,नेह, समाज आ परिवार के छोह बिछोह,भय,क्रोध,जीत, हार, मान,मनौवल संघे आपन सपना के कल्पित कऽ के रस भाव आ संवेदना के पुट से कथा, कहानी,आलेख कविता,लेख,व्यंग्य आदि लिखेले।इहे साहित्य के खजाना बन जाला।एकरा के पढ सुन के लोगन के मन में तोष आ खुशी देखल जाला।सिरिजन एही खातिर होला आ होई।कोई लिख के खुस होखेला आ कोई पढ़ि के। सभे के भाव के बाँचे वाला इ सिरिजन कतना लोगन के पीड़ा के कम करे में सहायक भइल बा तऽ केतना लोगन के मुख पर मुसुकी बिखेरे के काम करेला। समाज के रूप के विविधता साहित्य में सभत्तर आ समहरे मिल जाई। बस बुझेवाला मन होखे के चाहीं।रसिक मनई के ई खोराक होला। डिजिटल इंडिया के लोग नींद से उठते उ पहिले एकबार अपना मोबाइल पर सिरिजन कर देत बाड़न भा कुछ रचना के पढ़ के दिन के शुरुआत कर रहल बाड़े। साहित्य खातिर ई नूतन संकेत ह साहित्य के समृद्ध बनावे खातिर।

चलीं,आप सभे भी नवका साल में मकर संक्राति, वसंत पंचमी आ गणतंत्र के उत्सव के भागीदार बनीं आ आपन कलम के ताकत से भावना के सतरंगी रूप दीहीं।सब पुरनका भूल के सुधार के नूतन संसार रचल जाव। जिनिगी के सुख के संजोग बदे जोग जुगत कइल जाव। आपन आ अपना समाज के हाथ धऽ के आगे बढ़ल जाव। नवका साल के ई महीना परब आ उत्सव के खाँची भर के सुयोग लेके आईल बा । पीयर रंग में मन रंग के, गुड़ के पाग बन के आ तिरंगा के भाव के समेट के परब मनावल जाव। सरसो,मोजर आ गुड़ के गंध से गमकत धरती के नवरंग से सजावल जाव। सभे परब के

खूब बढ़िया से मनावल जाव आ उ दिन के सपन आ साँच के पतिआइल मनोभाव के कागज पर रंग भरीं । सभे लेखक लोग आ रसवाचक मनई से निहोरा बा कि मन के रंग के साहित्यिक संदूक के बड़हन करी। साहित्य के उत्कृष्टता हमनी के उदेश्य होखे के चाहीं।अनर्गल विदकल भा भोंडा लेखन से बच के सुन्नर सिरिजन होखे इहो हमनिये के दायित्व बा। रचना में मरम के जीवंत, पढ़ खातिर अकुआइल मन आ रचना के धरम बदे समर्पित सभे लेखक पाठक के दिन सुदिन सुमंगल आ सुखकर होखे इहे शुभकामना बा।।

■■

डॉ रजनी रंजन
सहायक सम्पादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

पूरबी

पाती लेके अइले बदरा बाँचे विरहिनिया राम।
जेतने बरिसे बदरा ओतने बरिसेले पपनियां राम।।

पिया मोरे कइसे के बितावत होइहे रतिया।
जहवाँ होई उनुके ठइयाँ पथरे के छतिया।
दोसरे जरावत होई बरखा के पनियाँ राम।।

प्रीति के मरमवा के धनपति ना जनले।
प्रितिया के रितिया के बाउर गति मनले।
अलका पूरी जरत बाटे लहरे अगिनियाँ राम।।

अपना पर बितेला जवन तवने बुझाला।
दोसरा के दुःख केहु कहाँ पतियाला।
लिखि लेब बादर ठाकुर विरह के कहनियाँ राम ।।

एहुजा के गति–मति साँचे बतलइह।
एने से लवटि के जब रामगिरि जइह।
धोइह मति नयनवां से अंजन निशनियाँ राम।।

राधा मोहन चौबे 'अंजन'

जन्म – 4–12–1938

मृत्यु – 15–1–2015

■■

ठकुरान के ठसक

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

विंध्य के पहाड़ियन के घाटी में बसल गाँव आ उहाँ के रहनिहारन के एगो अलगे सुघरई होले। पहुनई में त करेजा काढ़ि के रख देला लो, बाकि मोछ के बात आ गइल बेखौफ आर–पार करे खातिर उतर जाला लो। खेती– किसानी आ गोरू–बछरू से नेह छोह राखे वाला लो अपनइत नीमन से निबाहेला। अइसने एगो गाँव के बाति जवना गाँव में ढेर बाभन लोग रहे। ओह गाँव में अउरो जात धरम के लोग रहे बाकि एगो खास बात उ ई कि ओह गाँव में एगो राजपूत परिवारो बसल रहे। धन संपदा से भरल–पूरल, गाँव में बढ़िया घर आ सीवान में बढ़िया खेत । गाँव के बड़ लोगन में गिनती के संगही उठ–बैठ। रहन–सहन आ बात–बतकही में नफासत झरत रहे। ओह घर के मुखिया रहने बड़ भाई सुमेर सिंह, लमहर कद–काठी,गठल सरीर, गढ़ू –गम्हीर अउर रोबदार आवाज उनुका पहिचान रहे। छोट भाई कुबेर सिंह कद–काठी में त अपने बड़ भाई लेखा रहने बाकि रहने सोझवा। अपना दुअरहूँ पर जब बाबू सुमेर सिंह बइठस तबों धप धप उजर धोती,कलफ लागल कुरता आ उजरे साफा। बगल में पान से भरल पनडब्बा हर घरी राखल रहे उहाँ के लग्गे।

लगन–पताई के दिन चलत रहे। बाबू सुमेर सिंह अपना दुअरे हर घरी लेखा बइठ के अखबार पढ़त रहलें। तबे 3-4 लोग उहाँ के दुअरे चहुंपल आ परनाम–पाती क के ठाढ़ हो गइल। तब बाबू सुमेर सिंह बेचना के हाँक लगवलें, बेचना उहाँ के नोकर रहे, तुरते हाजिर भइल। तब बाबू सुमेर सिंह ओकरा के बाबू साहेब लो के बइठे चाह–पानी के इतिजाम करे ला अरहवलें। बेचना तुरते काम में लाग गइल। पहिले बइठे खातिर कुरसी राख के ओकरा सोझा एगो टेबुल राख देहलस। फेर धउर के मीठा आ पानी ले आइल

सभे के बारी बारी से पानी पिया के चाह–नमकीन लियावे ला चल गइल। थोर देर में बेचना चाह आ नमकीन लेके मेहमान लो के सोझा हाजिर हो गइल। मेहमान लो का संगही बाबू सुमेर सिंह चाह के चुसकी लेत मेहमान लो का संगे आइल बाबू धरम सिंह से मोखातिब होत पुछलें–'' बाबू साहब, अब बतावल जाव, अवनई के के कवनो खास मकसद बा कि एहर से जात रहलीन ह, एही से हालचाल लेवे आ गइनी हा?''

बाबू साहेब! हमनी के आइल त एगो मकसदे से बानी सन , धरम सिंह कहलें। मकसद ई बा कि रउरा छोट भाई के बेटा सतेन्दर सिंह परिवार में सभेले बड़ बाड़ें, उनही के बियाह खातिर आइल बानी सन। जोगिंदर बाबू के एगो बेटी बा, ओही ला रउरा से हथजोरिया बा। राउर दया हो जाई त जोगिंदर बाबू राउर समधी बनि जइहें। दूनों पलिवार देखल सूनल बा आ संस्कारित बा। इजत–मरजाद पर कतही केहु तर्जनी ना उठा सकत। बहुत सोच–विचार के हम जोगिंदर बाबू के संगे लिया के आइल बानी आ हमरा बिसवास बा कि रउवा हमरे एह अवनई के मान जरूर राखेम। बाबू धरम सिंह एकसुरिये आपन बात बोल के चुप भइलें।

रउवा सभे पहिले सतेन्दर बबुआ के देख लेहीं, जवन पूछे–जाँचे के होखे, उ पूछ–जांच ले. हीं, पसन क लेही, फेरु आगु कुछ बात होखी न। जानत त होखबे करब कि सतेन्दर बबुआ सिंचाई विभाग में सरकारी नोकरी में बाड़न। एतना कहला के बाद ठाकुर सुमेर सिंह बेचना के हांक लगावत सतेन्दर बबुआ के संगे लियावे के कहलें। गंठल कद काठी आ सुघर छरहर सरीर के मालिक रहलें सतेन्दर बबुआ। एक्के नजर में लइकी के बाबू–चाचा के पसन पर गइलन। गाँव में घर आ सिवान में खेती, नोकरिहा लइका, इजतदार आ समरिध पलिवार अउर का चाही एगो लइकी के बाप के। ई सगरी एकही जगहा भेंटा जाव, भल त अइसन होत नाही, अगर कतो अइसन कुछ बा त केहु लपके में ना पिछुआला। त इहाँ जोगिंदर बाबू कइसे पिछुआ जइतें। बाबू जोगिंदर सिंह तुरते हामी भर लिहाने आ बाबू धरम सिंह से बाति आगे बढ़ावे ला निहोरा कइलें।

अब बारी लइकी के देखे बात आ दिन धरे के आइल त बाबू धरम सिंह बड़ गम्हीर हो के कहलें कि हमार त दूनों घर आ लइका लइकी दे खले रहल ह। अब जइसन बाबू सुमेर सिंह जी के आदेश होई, उहे होखी। हमनी के हर तरह से तइयार बानी सन। उनका कहे के ढंग आ बाति रा खे के सहूर के फेरा में ठाकुर सुमेर सिंह अझुरा गइलें। ठसक का संगे कहलें कि जब लइकी

बाबू धरम सिंह के देखल बा त बूझी कि हमरो देखले बा।

बाबू धरम सिंह तुरते कहि भइलें कि बाबू साहेब ! रउवा के लइकी देखे के चाही आ नाही त फेर कुछों कहे –सुने लायक ना बाचेम।

हम काहें के कुछों कहेब, जब कह देनी कि राउर देखल बा त हमरो देखले बा। ठकुरान के मरजाद त इहे नु होला कि एक बेर कहि देलें त ओहके निभावल उनुका शान में सामिल हो जाला। जथाजोग लें–देन के बाति के संगे बियाह तय हो गइल। तिथि–मिति से तिलक भइल आ हरदी–धान बंटा गइल। लगन पतरियो लिखा गइल। मजे –मजे में बियाहो तड़क–भड़क का संगे हो गइल। अगिला दिने लइकी के बिदाई कराके ठाकुर सुमेर सिंह गावें आ गइले।

ससुरा के रीति–रेवाज निभावत आ कक्कन छोड़ावत,देवी–देवता लोग के पूजा–फरा करत–करत पहिला दिन बीत गइल। अँगना में पूजा के रसम बाकी रह गइल ओकरा बाद मुँह देखाई के रसम होला । ओकरा बादे लइका–लइकी एक दोसरा से मिल पावेलन।

दोसरा दिन अँगना में पूजा होखे लागल तबे दुअरे चउथारी लेके लइकी के नइहर से 15–20 लोग पहुंचल। ठाकुर सुमेर सिंह मेहमान लोगन के आवाभगत में अझुरा गइलें। फेर उहें एहर–ओहर के बात–बतकही चले लगल। पूजा के बाद लइकी के मुँह देखाई के रसम रहल। भर गाँव से लइकी मेहरारू लो ठाकुर साहेब के बहुरिया के मुँह देखाई करे आवे लागल। मुँह देखला का बाद मेहरारू आ लइकी भुसुराते जात कइयन के देखलें बाबू साहेब। उनुकर माथा ठनकल। मनही मन सोचलें कि कुल्हि लइकिया आ मेहररुआ काहें आ का भुसुर–भुसुर बतियावत जात बानी सन। कुछ त बात जरूर बा? अतने में कहरान के दूगो मेहरारू लउटत लउकनी। ठाकुर सुमेर सिंह हाँक लगा के बोलवने आ पुछलें, ए चाची कवनों बात बा का?

बाबू सुमेर सिंह का अतना पूछते कमरिनिया चाची फूट परल। कतना रूपिया गनवला ह, हो सुमेर बाबू जे सुघर –साघर लइका के सिरे कानी मेहरारू लाद दिहला। बियाहे करे के मिलल त, तहरा के कानिये लइकी भेंटल ? लइकवा में कवनो कमी बा का? कि ओकर बियाहे ना होत रहल ह जे जवन मिलल उहे उठाय के ले अइला ह? भा कवनो अउर दुसमनी भाई के लइका से साधे के रहल हा? अतना सुनते बाबू सुमेर सिंह के काठ मार देहलस। मुँह खुलल के खुलले रहि गइल? फेर त मारे क्रोधन ठाकुर धरम सिंह के गरियावते बइठका का ओर बढ़ने।

ठाकुर धरम सिंह त एह खातिर पहिले से तइयार रहलें। ई कुल्हि उनही के कइल –धइल रहल। ठाकुर सुमेर सिंह के सोझा अवते ठाकुर धरम सिंह ऊंच अवाज में बोल पड़लें, रउवा बाबू साहेब बानी कि कुछ अउर। जब ओह दिन जहिया तय–तमान होत रहे त हम कई बेर कहनी कि बाबू साहेब, लइकी देख लेही, बाद में जनि कुछो कहेम कि कनियवाँ लूल,लंगड़,आन्हर भा कानी बिया। मरद हई त मरद के बात एक्के होला। अब काहें नटई फारत हई। जब 100 के समाज में कनियवा के बियाह के ले आइल बानी त ओके निभावहूँ के पड़ी। बाबू सुमेर सिंह के सोझा कवनो उत्तर ना सूझल। उनकर ठकुरान के ठसक धइल के धइल रह गइल।

■■

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता
कम्पुटर मार्केट, गाजियाबाद

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता सहित्यांगन

'आखर-आखर गीत' आ भोजपुरिहा तड़का

विजय कुमार तिवारी

हमरा संगे रऊओं सब के मन खुश होई कि हमनी सब मिलि–जुलि के भोजपुरी भाषा के कवि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी के कविता संग्रह ''आखर–आखर गीत'' में डुबकी लगावे वाला बान.ीजा। साहित्य कवनों भाषा में होखे, ओह में रस होला। रस होई,त तनी–मनी त होई ना,साहित्य के रस के औकात कवनो नदी लेखा होला,आ सांच कहीं त समुन्दर ले खा होला। समुन्दर में डुबकी लगावल सहज होला? ना होला। तबो लोग लागल रहेला आ मोती–मानिक निक.ालत रहेला।

भोजपुरी में लिखला–पढ़ला के लेके खूब चर्चा होत आइल बा। बाकिर लोग तनी दबल–दबल लेखा बतियावेला। एकर रहस्य हमरा आजु ले ना बुझाइल। एतना रसदार आ गम्भीर भाषा बोले वाला लोगन का टांठ रहे के चाहीं। हम त डंका का चोट पर कहेनी,भोजपुरी के शब्द–सामर्थ्य का आगा,कमे लोग खाड़ा होई। भोजपुरिहा लोग दुनिया में खूब फइलल बा आ आपना दमखम पर आपन मुकाम बनवले बा। भोजपुरिहा लोग हिन्दी आ अंग्रेजियों भाषा में पढ़ि–लिखि के दुनिया का कोना–कोना में ललकारत बा। एकर मूल कारण दुनिया बुझि रहल बिया, भोजपुरिहा भाई लोग जहाँ रहेला जिम्मेवारी उठावेले, भरोसा ना तुरेले आ कम दरमाहा का बावजूद डटल रहेले। हमनी भोजपुरिहा का पास बहुत गुन बा। जे आदर–प्रेम से रही,भोजपुरिहा जान दे दिहें आ केहु आँख देखाई त ओकरा दस बेरि सोचे के पड़ी।

डा० ब्रजभूषण मिश्र जी एह संग्रह के आपना भूमिका ''आखर–आखर गीतः झलकत जग से प्रीत'' में बहुत सुन्दर–सुन्दर बात लिखले बानी। जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी समर्पित बानी भोजपुरी खातिर। साहित्यिक आंदोलन, संगठन,प्रकाशन,पत्रिका संपादन आ लगातार लेखन सब भोजपुरी खातिर, भोजपुरी भाषा में। बहुत कम लोग मिली अइसन समर्पित व्यक्तित्व वाला। ओइसहीं वाराणसी से डा० सुमन सिंह जी एह पुस्तक पर आपन जबरदस्त टिप्पणी कइले बानी। पटना से दिनेश पाण्डेय जी के विस्तृत समीक्षात्मक लेख छपल बा एह संग्रह में। डा० ऋचा सिंह(वाराणसी) आ डा० रजनी रंजन(घाटशिला) के टिप्पणी से एह संग्रह के महत्ता बुझाता। ''आपन बात'' में खुदे जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी आपना रचना–प्रक्रिया पर प्रकाश डलले बानी। विनम्रता पूर्वक कहत बानी,एतना ज्ञानी–गुनी भोजपुरिहा विद्वान लो के बाद हमरा लिखे लायक कुछु शेष नइखे।

'आखर–आखर गीत' संग्रह में द्विवेदी जी के लिखल कुल तिहत्तर गो गीतन में उहाँ के नाना तरह के भाव के मोती चमकत बा। द्विवेदी जी के रचना संसार सामयिक विषय से भरल–जुड़ल बा आ खूब प्रासंगिक बा। उहाँ के गीतन में भोजपुरी माटी के सब रंग बा, सब सुगंध बा आ सब तरह के विधा के दर्शन होता। भाषा के संस्कार बेजोड़ बा आ शैली भी खूब आकर्षित करे वाला बिया। उहाँ का भोजपुरिहा लोक धुन, भोजपुरी रस आ भोजपुरिहा भाव–विचार से खूब परिचित, जानकार बानी। सुखद बा, उहाँ का भोजपुरी के आपन ''माई भाषा'' मानि के लागल बानी।

संग्रह के शुरुआत 'सरस्वती वंदना' से भइल बा,आ 'ए हो माई तोहरे अवनवाँ','देवी गीत', 'परसुराम जी क सुमिरन','सुना हो बजरंग बली' जइसन भक्ति–भजन के गीत द्विवेदी जी के भीतर के प्रेम से भरल बा। हमनी के भोजपुरी माटी में सब देवता लो के गीत–भजन गावे के परम्परा बा। एह गीतन में जवन भाव उभरल बा, सबके मन मोहि ली,सबके हृदया में भक्ति जागि जाई आ देवी–दुर्गा,बजरंग बली प्रकट हो जइहें। भगवान परशुराम के द्विवेदी जी आपना तरीका से गवले बानी आ बखान कइले बानी।

द्विवेदी जी के व्यंग्य के धार आ मन के पीड़ा 'अंग्रेजी बोल बोले सुगना' में देखीं–

मेहर देख माई भुलाइल
बाप क अनही शामत आइल
रिस्तन के बुझे व्यापार हो
अंग्रेजी बोल बोले सुगना।

'कुकुरा भइले कुलीन','घुमची के भइल बा गुमान','चौरवा मचावे बड़ा शोर' आ 'रउआ राजा बानी' गीतन में उहाँ का व्यंग्य आ तनी हास्य लिखले बानी। देखल जाव–

चोरिये में कटल जिनगी
हेरीं केकरा ईमान
आइहो दादा! घुमची के भइल बा गुमान।
आ इहो देखीं–
चोरवा मचावे बड़ा शोर हो
रोज भोरहीं दुआरे
उहो देखते भइल मुँहजोर हो
रोज भोरहीं दुआरे।
'रउआ राजा बानी' गीत पढ़ीं–
जरत जाँगर डहके जवानी
रउआ राजा बानी
करत फिरीं सगरों मनमानी
रउआ राजा बानी।

व्यंग्य के धार कवनो जरूरी नइखे,खूब चिल्ल. इले से देखाई दी,द्विवेदी जी संयत भाषा में आपन लकीर खींचि देले बानी। इ काम सब से ना हो सकेला। एकरा खातिर आलगा दृष्टि होखेला। जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी में ओइसने दृष्टि बा।

विरह–भाव के कइगो कविता एह संग्रह में भरल बा। एकरा पीछे के सिद्धान्त इहे मानल जाला कि संयोग होई त वियोगो होइबे करी। संजोग सुख देला त वियोगो के आपन सुख होला। देखे में त दुख बुझाला बाकिर वियोग में प्रेम के अनुभूति खूब गहराई से महसूस होला। 'हियरा,रहि–रहि के' कविता के भाव देखीं–––तड़पन सहले ना सहात,आफत कहले ना कहात,पिया बिन रहलो ना जात। नायिका के मन के भाव बा–हियरा रहि–रहि के फगुनात आ मन कचोटता, उनका बुझात नइखे कि फागुन आ गइल बा। द्विवेदी जी नायिका के मन के भाव के खूब उजागर कइले बानीं। 'हिया दहकाय गइल ना' में नायिका का खाली वियोगे नइखे बल्कि रोपनी करावे के बा आ सावन के झूलो बा। ओइसहीं पियवा वियोगे,फूले हो लागल ना, पिय के आस,कहवाँ लुकाइल बाड,झुलुवा कइसे झूलिहें धनिया,नेह के तलइया सुखाइल,मन भितरि समाइल आ भोरे–भोरे अइहें हो सुगना जइसन कवितन में नायिका वियोग के अनुभूति कइके उभकत–चुभकत बाड़ी। तनी एने चाहे ओने, नायिका के भीतर के दुख द्विवेदी जी खूब समझले बानीं। सबसे बेजोड़ उहाँ के भाषा में भाव आ शब्द चयन बा।

दुनिया भर में कोरोना महामारी लोगन के तबाह कइ दिहलसि,कातना लो मरि गइल आ सब लो. गन के जिनिगी में तूफान आ गइल। जे जहवाँ रहे, ओहिजा लाकडाउन में रहे के परल। ओह दौर में ले खक,रचनाकार लोग आपना–आपना भाव–विचार में खूब लेखन कइले आ आपन धरम निबहले। द्विवेदी जी 'ई कोरोनवा हो' कविता में बड़ा जीवन्त चित्रण कइले बानी–कई देहलस सबहीं के उदास,भरि लेहलस सबके बाहुपाश,बहुतन के करता उपास,सूझत नइखे जिनगी के आस आ लील गइल सगरी बिसवास। ओइसहीं कोरोनवा में पिया,कोरोनवा का डर,चहके कोरोनवा आ मरकिनौना कोरोना लेखा कइगो कविता लिखि के उहाँ का आपन पीड़ा आ विचार व्यक्त कइले बानी। द्विवेदी जी लोगन के 'अँखिए से अँखियाँ' कविता में आगाह करत बानी–मुँह–नाक तोपले भेटइहें लोग सगरोध्अँखिए से अँखियाँ चिन्हल कर बबुआ। इहाँ भांति–भांति के लोग बा,सबके बुझे के पड़ी,बचि–बचि के मिले के पड़ी आ सभका साथे सोचि–सोचि के जीए के पड़ी। 'अँगनइया में आई जा हो' घर–परिवार में सुख–दुख से भरल गीत बा जवना में नन्हकी चिरइया चहक के आपना सजन के बोलावत बिया। वियोग में नायिका के विरह दुख के सुन्दर भाव उभरल बा 'आँख मोरी सावन भइल' कविता में। 'कुसुमी' शब्द भोजपुरिये में होला जवना के भाव बहुत व्यापक मानल जाला। एह कविता में मरद आपना पत्नी से कुसुमी अँचरवा फहरावे खातिर आग्रह करत बाड़े। नायक एह कविता में खूब हिलोर लेत बाड़े आ नाना तरह से आपना धनिया से निहोरा करतारे। 'अ ले बसंत दुलहा' में दुनों सखि लोग बतियावत बा। बसंत ऋतु आवते सब कुछ बसंती होखे लाग. ला। बसंत के दुलहा मानि के उमंग,हुलास आ नाना तइयारी शुर हो गइल बा। द्विवेदी जी के रसिक मन खूब अनुभव से भरल बा।

'आखर–आखर गीत' कविता के नाम पर द्विवेदी जी एह संग्रह के नाम रखले बानी। एह में गूढ़ भाव भरल बा आ बिम्ब के माध्यम से अलगा तरह के विचार दिखाई देता–कन–कन में संगीत, सोनहुल भोर आ आखर–आखर गीत। 'एथी आ अथुवा' में तनी हास्य बा। लोग बतियावेला आ बीच–बीच में 'एथी' चाहे 'अथुवा' बोलेला। एकर कवनो खास मतलब ना होला,बस लोग बोलल करेला। एथी के प्रयोग जियादा बलिया में होला आ अथुवा बनारस में। द्विवेदी जी के सलाह बा, छोड़ ए सखि,चल बथुआ के हरियर साग खोंटि आइ जा। उहाँ का 'कहवाँ मोर दलान' में लोगन के पीड़ा लिखले बानी कि सब कुछ बा बाकिर दलान कहवा हेराइल बा। द्विवेदी जी के कवितन में समाज में व्याप्त गरीबी,दुख,पीड़ा आ विसंगति के सटीक चित्रण भइल बा। उहाँ का पासे शब्दन के भरमार बा,भाषा ज्ञान बा आ शैली बेजोड़ बिया। दुरुह आ कठिन शब्द कहीं–कहीं व्यवधान लेखा लागता बाकिर प्रवाह बिगड़ल नइखे।

द्विवेदी जी मौसम के रंग–ढंग,फगुनी बयार,सावनी बहार आ सावन में फुहार के रस लेत खूब लिखले बानी। लोग होली में भाँग पियेला। प्रकृति में जोश आ उमंग भरल बा,तुलसी चउरा

बा,सुगना बउराइल बा,छिछरी गड़हियो फफाइल बिया आ बुढ़वो मधुआइल बा। मधुरितु आई गइली ना,सावन में फुहार पड़े बलमू,सावनी बहार आ बहार तोरे अँगना जइसन रसगर कविता पढ़े–सुने वाला लो के कलेजा ध ाड़का देत बा। नायिका के पीड़ा 'तहार बतिया आ 'तहार सुधिया' में देखते बनता। उनका हर तरह से दु खे मिलता पतिदेव का बात से। तहार सुधिया में नायिका आपना विरह वेदना के हर रंग–रुप बतावत बाड़ी। 'सुना हो बबुआ' में संदेश बा कि कोरोना के प्रकोप बा,घरही में रह हे बबुआ। महँगाई के लेके पत्नी आपना साजन से कहतारी,अब कुछु कीने के मत सोच,घर बनावल संभव नइखे,हमार लुगवो तार–तार हो गइल बा,लइका के पढ़ाई छूटल आ बेटी खातिर दामाद कइसे खोजाइ। द्विवेदी जी महँगाई के चलते घर के दुर्दशा के यथार्थ चित्रण कइले बानी। 'हलचल भइल' अटल जी के समय पोखरन परीक्षण के इयाद में कविता बा।

द्विवेदी जी खिचड़ी पर्व मनावे खातिर सखि लो के बातचीत लिखले बानी। मकर संक्रान्ति पर्व पूरा देश में अलग–अलग नाम से मनावल जाला। हमनी भोजपुरिया खिचड़ी बनावेनी जा। गुड़ तिल के दान होला। 'खोज' कविता में, समाज में भरल विसंगति के चर्चा भइल बा आ नीमन–नीमन लोग के खोज आ नीमन बात सिखावे के संदेश बा। गंगा मैया,राधा रनिया,शिवा नहीं खेल रही होरी भिन्न–भिन्न भाव–चिन्तन के रचना उहाँ का लिखले बानी। 'मजूर हई भइया' में मजदूर के संघर्ष आ दुर्दशा लिखाइल बा। कवि जी गाजियाबाद में रहेनी,लिखतानी–पहिरी के निकलब खादीध्ठसक हम गाजियाबादी। हास्य आ व्यंग्य भरल बा एह कविता में, जिला के दुर्दशा बा, बाकिर उहाँ का–हँसिले देखी बरबादी। 'बीरन अँगना' भाई–बहन के बीच राखी बान्हे के लेके आत्मीय आ मार्मिक भाव के कविता बा। बहिन ससुराल से मायके भाई के राखी बान्हे जाएके तैयारी करत बाड़ी–

पहिरब हरियर चुड़िया पीयर कंगना,
बान्हे जाइब रखिया बीरन अँगना ।

'बेइमान बरजोरी अँचरा उड़ावे' वियोग में नायिका के दुःसह दुख के कविता बा। पछुआ पवन बेमौसम सतावता आ नायिका के अँचरा उड़ावत बा। कवि जय शकर प्रसाद द्विवेदी जी आपना संग्रह में रसिक–रुमानी भाव के बहुत कविता, गीत लिखले बानी। शरीर के पोर–पोर, अंग–अंग में मौसम के प्रभाव बा आ पिया उनका साथे नइखन। एगो–दुगो पंक्ति दे खीं–ननदी के बतिया बेधेला मनवाँध्टह–टह अँजोरिया ताना सुनावेध्बेइमान बरजोरी अँचरा उड़ावे। गाँव–घर में टोनहिन, मंथरा आ चुगली करे वाली कुछ औरत होली स, द्विवेदी जी के व्यंग्य बड़ा निमन लागता।

कवि,लेखक,संपादक जयशंकर प्रसाद द्विवेदी जी का अनुभव संसार बहुत व्यापक बा,रसज्ञ बाड़न,वियोग के चित्रण पर महारत हासिल बा आ खूब जमि के लिखे के क्षमता बा। भोजपुरी काव्य संसार उहाँ के लेखन से समृद्ध हो रहल बा। 'सँवरी सुरतिया' कविता में रजमतिया के भक्ति दे खीं,द्विवेदी जी लिखतानी–सपना सजवलसधदियरी जरवलसध्सोचि–सोचि मनवा पिरितिया बढ़वलसध उनुसे नेहिया क रीतिया निभाई हो लिहलस ना। कान्हा के मूर्ति मन में बसल बा। उनुके निनि सुते, उनुके निनि जागे,इहे ओकरा जिनिगी के नियम हो गइल बा,सब खाइल–पियल भुला गइल बिया आ कान्हा संग पिरितिया लगाई लेले बिया। मधुमास माने बसंत ऋतु में कवि के भाव–विचार देखीं–हे सखि! मधुमास आवते,केहु–केहु खास बनल जाता आ इ भँवरवा अदबद कोढ़िए,कलियन पर बइठता। मधुमास में प्रौढ़ा नायिका के इ भाव खूब मन से रचले बानी द्विवेदी जी। 'गीत' नामक कविता में कच्चा उमर के नायिका पर गँवे–गँवे सावन के खुमारी चढ़ल जाता,मने–मने मुस्कात बाड़ी,सपना में डोली चढ़त देखतारी आ खूब–खूब भाव से भरल बाड़ी। अइसन भाव चित्रण में माहिर बानी द्विवेदी जी। 'गुजरिया लजा गइली हो' कविता में नायिका के रंग–ढंग देखीं–सइयाँ पर अपने मोहा गइली/भोरहीं शरमा गइली। सइयाँ पर अपने लुटा गइली/भोरहीं शरमा गइली। द्विवेदी जी आसपास के नायिका लो के देखि–देखि के हर मौसम के हाव–भाव के साँच–साँच वर्णन कइले बानी।

भाव भाषा आ लोक शब्दन के जानकारी जेतना द्विवेदी जी के बा आ रस छन्द,अलंकार, मुहावरा के प्रयोग कइले बानी,उहाँ के काव्य में खूब गहराई आ रोचकता बा। 'जँतसार' गीत में लिखतानी,पिया जी के देखते बगिया गमकि जाला, जियरा सहकि जाला,मथवा से सड़िया सरकि जाला,मुखड़ा चमकि जाला, हथवा के चुड़िया खनकि जाला,ओठवा के ललिया लहकि जाला आ बिछुवा बहकि जाला। पाठक लो डूबत–उतरात रहि जाई। 'जतन करें' आ 'जरिये से जरे जर जरिये से' कवितन में द्विवेदी जी कवनो भिन्न भाव–चिन्तन लिखले बानी। हमनी का समाज में अइसनो बहुरिया लो बा जे घर–परिवार के हिला के राखि देली। तनकि ठहरि जा,तनि डरता नजरिया,पियवा सिपहिया,बीनवा क तार आ देश के डहरिया अलगा–अलगा संगति–बिसंगति के दृश्यन के कविता बा। एह कवितन में यथार्थ बा देश–समाज के आ टकराव,दुराव–छिपाव बा। उहाँ का 'धिया' कविता में बेटी के लेके सुन्दर भाव–विचार लिखले बानी। 'माई नेहिया क मोटरी'

कवितन में माई–बाबूजी के बखान कइले बानी।

द्विवेदी जी समाज के नस–नस से परिचित बानी आ आपना साहित्य में भरि देले बानी। उहाँ का कवितन में जन–जीवन खूब रचल–बसल बा। धान के खेत में फसल के कटाई का बाद के खुशी 'बलइया लेहु ना' कविता में लिखले बानी–सोना अस फसल देखि मन अगराइल होध्धरती मइया सभकर करेली भलइयाधकि बलइया लेहु ना। उहाँ का कवितन में गीत गावे लायक भाव– संजोग बनल–छिपल रहेला। ई उहाँ के आपन विशेषता कहाई। 'पहुना के अवनवाँ' के बिम्ब देखीं–अँगना उचरेला काग होध्पहुना के अवनवाँ। पाहुन आवे वाला बाड़न,तैयारी होता। बहुत सुन्दर चित्रण भइल बा। 'पगली कोइलिया' में वियोग आ संजोग के इच्छा के लेके सुन्दर भाव–सम्प्रेषण भइल बा–

पगली कोइलिया काढ़ि करेजा
पियउ के गोहरावेले,
छीजत राह निहारि कोइलिया
मिलन क आस जगावेले।

ओह स्थिति के कल्पना करीं जब नायिका प्रतीक्षा में बेचौन बाड़ी आ अचानक पिया दिखाई दे दिहले। 'निरखेला मनवाँ विहान' के भाव देखीं–अचके लउक गइले पिया परदेशियाध्अब भइल नेहिया जवानधनिरखेला मनवाँ विहान। 'निसार मोर अँखिया भइल' में नायिका के भिन्न–भिन्न बिम्ब के माध्यम से हाव–भाव,प्रतीक्षा,मिलन के उत्साह आ हृदय के कसकल लिखि के द्विवेदी जी हमनी खातिर परोसले बानी। एतना गहिरा दृष्टि,गहिरा भाव आ संवेदना कम लोगन में मिली। द्विवेदी जी के ''आखर–आखर गीत'' पढ़िके मन बसंती आलोक से भरि गइल बा। हम उहाँ के श्रद्धा पूर्वक बधाई देत बानी आ उम्मीद करत बानी उहाँ का अइसहीं खूब लिखत रहीं।

समीक्षित कृति	**आखर आखर गीत(कविता संग्रह)**
कवि/लेखक	**जयशंकर प्रसाद द्विवेदी**
मूल्य	**रु 160/–**
प्रकाशक	**सर्व भाषा ट्रस्ट नई दिल्ली**

❑❑

❍ **भुवनेश्वर, उडीसा**

परदेसिया

सन्नी भारद्वाज

सुधिया मराइल बाटे बुधिया हेराइल बाटे
सूझत नाही कउनो मोके राह परदेसिया।

अदबद पीटी छाती भेज देइ केसो पाती
अखीरी आसरा बुझु चाह परदेसिया ।

भगिया में कीरा परल अगिया करम जरल
कतो नाही लउके अब छाह परदेसिया ।

कहा पथराइल जानी मतिया मराइल जानी
लागे नाही उपर तोर थाह परदेसिया

इहे जदि मन रहे तोरे के सपन रहे
धइले रहे काहे खातिर बाह परदेसिया ।

अवती न धरी गाडी सवती के छोडी साडी
धायी धायी परत बानी पाँव परदेसिया ।

छोडी मोके घरवा में कवने पिजरवा में
चुगे दाना कहा लागल लाह परदेसिया ।

मुइनी के खोजु दासा गनपती केकर आसा
देखत दिन बीतल बारह मास परदेसिया ।

❑❑

❍ भभुआ, बिहार

भोजपुरी के मान बढ़ाई. भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

बुझाते नइखे

रत्नेश चंचल

का कहीं केसे कहीं कुछ बुझाते नइखे
सुन सके केहू अइसन देखाते नइखे ।

जेठ बीतल कुआर बीतल फागुनो बीती
ई लोर आंखी के अबले सुखाते नइखे ।

ऊ बड़ जेठ अउर जमाना से का लजाई
जे अपना से कबो लजाते नइखे ।

गांव के शिवालो सुनसान परल बा
साल में एको बेर सोमारी गवाते नइखे

घरे जबले इन्वर्टर के कनेक्शन भइल
मीठका तेल के संझवत बराते नइखे

शहर में जाके तू शहर के हो गइला
तेवहारो में देवकुर पूजाते नइखे।

मन तरस जाला लैनू के लोना बदे
चंचल बेहुंड़ी में मंठा महाते नइखे ।

❑❑

❍ कैमूर, बिहार

चटकल दीयना

देवेन्द्र कुमार राय

नेह खेत के माटी से बनल
अजबे चमकत दीयना रहे,
गाँव जवार जे जे भी देखल
अंजोर करी इ सभे कहे।।

समरपन के पानी से सानल
मेहनत के माटी चिकनाइल,
आखर भाव के घाम तले
अचके दीयना छितराइल।।

बिन आवाज के दीया फूटल
कतनो जोड़नी नाही जुटल,
आस लावल भइल बेमानी
लागे ओखरी में मुड़ी कुटल।।

घरहीं के संइचल दीयना में
नीयत के तेल भरवले रहीं
जाने दीयना काहे भभकल
राय इ मरम कहवां कहीं।।

❑❑

❍ **जमुआँव भोजपुर बिहार**

शराबी एक दम ना हँ

दीपक तिवारी

लइका सुंदर सुशील छरहर लमहर,
हमरा गउवे के बगल में हँ ममहर।
कवनो हीरो से देखे में कम ना हँ,
शराबी एक दम ना हँ।

खाला तम्बाकू ना बाउर हँ नशा,
मन के मोहेला ओकर भाषा।
भीतर ओकरा अचीको हम ना हँ..
शराबी एक दम ना हँ।

बाउर ओकरा के कहे ना केहू,
आपन खासम खास होखे सेहू।
ओकर गलत कवनो करम ना हँ..
शराबी एक दम ना हँ।

कतना गुन अँगुरी पर गिनाई,
तोहके दीपक खुल के बताई।
लोग का कही ओकरा गम ना हँ..
शराबी एक दम ना हँ।

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

कलुआ अउर ठारी

लालबहादुर चौरसिया 'लाल'

कलुआ के घुम्मत हम देखलीं,
हाड़ कंपाऊ ठारी में,
मोफलर सुइटर घरे छोड़ि के,
दउरत रहल बजारी में।,

हमसे भेंट भईल पोखरा पे,
कहलीं कल्लू सुना तनी,
जाड़ा बड़ी जोर हौ बाबू,
अपने मन में गुना तनी।,

पहिन के फतुही बबरी झरले,
फैशन में तो घूम्मत हउवा,
खाइके गुटका बड़े शान से,
मस्ती में तूं झुम्मत हउवा।,

बाबू जाड़ा बड़ी जोरी हौ,
अइसे रहबा लगि जाई,
नाजुक उमर के टायर हउवे,
ढेर हवा में दगि जाई।,

केतनी रुपया झोंकल जाले,
अकठे छोट बेमारी में,
एकर तोंहके थाह न हउवै,
बाटा नई खुमारी में।,

सुनि के बात मोर हे भयवा,
झट से मूड़ी फेरलै ऊ,
आंख काढ़ि के उप्पर नीचे,
हमके खूब तरेरलै ऊ।,

कहलै दादा! काहे मोंसे ,
झूठ्ठे लेक्चर झारत बाटा
अपने तौ तूं हिल्लत हउवा,
मोंके काव निहारत बाटा।,

सठियायल तूं बटा बुढ़ऊ,
रहै दा तूं समझावै के,
सिखि के पास हईं तूं सुनिला,
छोड़ा अउर सिखावै के।,

सुनिके ओकर बात ए बाबू,
लागल ठेस करेजा में,
आज के लइकन के हे भयवा,
काव भरल बा भेजा में।,

तिसरे दिन हम ई सुनलीं की,
कलुआ बहुत बीमार हवे,
लगि गइल बा ठंडी ओके,
बड़े जोर बोखार हवे।,

गइलीं देखै ओढ़ि रजाई,
कंहरत रहल ओसारी में,
कहलै दादा माफ करा अब,
कबों न घुम्मब ठारी में।।

❑❑

❍ आजमगढ़,उ0 प्र0

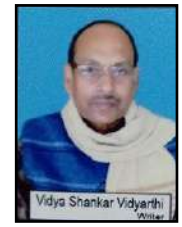

गजल

विद्या शंकर विद्यार्थी

आदमी बात के धनी बाटे
सोच के जान लीं फनी बाटे

सांप के मिल जहर त जाई जी
काट ना मिल सके मनी बाटे

खाट से उठ कहाँ सकी जिनगी
चाट के जे गइल शनी बाटे

राख के का करीं मली केहू
बात बा साफ दुश्मनी बाटे

आदमी का भरी कमी विद्या
बाकि तऽ बात के बनी बाटे।

❑❑

❍ झारखंड

परधानी

योगेंद्र शर्मा 'योगी'

बदल गइल आशा परिभाषा
पंचयती के भाई
परधानी व्यवसाय हो गइल
जनता लेत जम्हाई।

पकड़ के गरदन खुद्दारी क
अगबै काटल जाई
हत्या होई लोकतंत्र क
देख देख परछाईं।

खींच दियाई सांच के जिभिया
जरिको अगर ढिठाई
हाँ जी हाँ जी करि जे गोइयाँ
ओकर होइ कमाई।

फरि फूलि खुब चाटुकारिता
बिहँसी खूब बेहाई
ओही के आवास मिली
जे उनकर गाना गाई।

बिना कमीशन गऊशाला
शौचालय हाँथ भेटाई
चलत रही जब तक मनरेगा
घर भर चिखि मलाई।

बाह रे खद्दर संबिधान भी
तोहके देख लजाई
जब तक दल्ला अऊर दलाली
इज्जतदार कहाई।

मय बखरी सरबोटी रबड़ी
दूध घीव गटकाई
बाचल मंठा पास पड़ोसी
एन्हे ओन्हे बटाई।

जय हो जय हे राजनीति
के सुनी दरद दोहाई
अबरा झँखी बइठ दुआरी
'योगी' लूट मचाई।

परधानी व्यवसाय हो गइल
जनता लेत जम्हाई।।

❑❑

❍ भीषमपुर, चकिया, चंदौली,

आ जइतू ए बरखा

विमल कुमार

सुखल टहनियन में अँखुआ धारा के
दिहलू जीनिगी मौवत से बचा के
गइलू छोड़ि केकरा बतिया में आ के
का नीक लागी तहरा मोर मरलका
आ जइतू ए बरखा

बुझे ना बरत रहे आस के बाती
नेह के चदरा से बन्हबू तु गाँती
हुलसी हिया फेरु अँचरा के पा के
सुता बुने लागी मनवा बनि चरखा
आ जइतू ए बरखा

गरजि बरसि नेह के बुनिया पिअइतू
नेह से बारवा में अँगुरी फिरइतू
कचनार देह सुखेला कुम्हिला के
का ठीक होला डाल बिया चरलका
आ जइतू ए बरखा

❑❑

❍ जमुआँव भोजपुर बिहार

गजल

भालचन्द त्रिपाठी

रुप रचि रचि सँवारल गइल
एक छन में बिगारल गइल

आज तनिको न देखत बने
काल्हि केतना निहारल गइल

झूठ एगो छिपावे बदे
बाति केतना मठारल गइल

जवना तोपल रहे के चही
बाति ऊहो उघारल गइल

जब न कउनो सहारा बचल
नाम उनकर पुकारल गइल

केहु के पीछे परल बा सभे
केहु के केतना सम्हारल गइल

❑❑

❍ गौरी आजमगढ़

खेत

सविता गुप्ता

चल सखी हाली हाली।
खेतवा में फुटाइल बाली।
ओहपर गुथाइल मोती ना।
लागे सोना जइसन ना।

खेत हमार माई जइसन।
भरे पेट बाप जइसन।
भरे भंडार दुनिया के ना।
लागे सोना जइसन ना।

आइल अइसन आँधी पानी।
बुता गइल आस हो धानी।
कइसे कर्जा उतारब ना।
थाती हमार डूबल ना।

चढ़ी बुचिया के हरदी कईसे।
खेत बिकाई जइसे तइसे ।
बियाह कर भार उतारब ना।
ए हरि सोना पार उतार ना।

अंगना मड़वा छवाइल।
माई जइसन खेत बिकाइल।
बुचिया के भइल बिदाई ना।
ए हरि दीही आशीष ना।

❑❑

❍ राँची झारखंड

गीत

कृष्ण देव घायल

चढ़ गइल जाड़ के जवानी
मनवाँ मनउले न मानी
बरी जब कउड़ा धधकि जाई आगी
जाड़ा के नानी लमहरा ले भागी
गरमाई दुअरा –बथानी
मनवाँ मनउले न मानी

लुगरी बटोरि के सिया जाई लेवा
जे आई ओकर ओही से होई सेवा
कतना ले बुधुआ बखानी
मनवाँ मनउले न मानी

कचरस पी के ऊ जिनगी जियउलस
गदरा के दाल मेहमान के खियउलस
होरहा देखावे मरदानी
मनवाँ मनउले न मानी

पुअरा का पहल पर कटि गइल रतिआ
दिनवाँ घमउनी के परलीं अदतिआ
भलहीं से खर्ची खोटानी
मनवाँ मनउले न मानी

❑❑

❍ मऊनाथ भंजन, उ0 प्र0

गजल

अजय साहनी

का रहे ,का शहर हो गइल।
बेवफा हर बशर हो गइल।।

नाम के रोशनी, रोशनी,
भूतिया सब डगर हो गइल।।

दाँत हमरो भइल साँप के
ई शहर के असर हो गइल।।

दर्दे–दिल के दवा ना रहल
अब त नशवो जहर हो गइल।।

गाँव आजो बुलावे मगर,
आज गाँवो शहर हो गइल।।

हर घड़ी जिंदगी के 'अजय',
जेठ के दोपहर हो गइल ।।

❑❑

❍ ग्राम–महुली, पो..अगौथर नंदा

जिला..सारण (बिहार)

कइसन जाड ई आइल बा

डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'

मौसम मार देखवलस आपन
ऊपर सांस टंगाइल बा
जाड़ हिलावे हाड़ बाप रे आफति पीयल–खाइल बा।

सन–सन–सन–सन बहे बेयरिया
हाथ–गोड़ कठुआता
धरती पर कुहरा छपले बा
सब सरेह सितिआता।
मजदूरी मजबूरी बाटे
रधवा केकुरत जाता
भात कटोरा में कउड़ा पर
सेंकि के बाबू खाता।।
लागे सब कुछ बदलल–बदलल
मन–मिजाज मलुआइल बा।

जाड़ हिलावे हाड़ बाप रे आफति पीयल–खाइल बा।
.
थर–थर कांपे जिया–जनावर
ठंडी कहां सहाता
घेंकुरी मरले कलुआ कुकुर
कोंईं–कोंईं कोंकिआता।
होत फजीरे भागत भिखुआ
उंखिआड़ी में जाता
छिलत,नहरत,लादत उंखिया
मने–मने मुसकाता।।
एही असरा पर परबतिया के
बियाह ठनाइल बा।

जाड़ हिलावे हाड़ बाप रे आफति पीयल–खाइल बा।
भइल भयावन माघ–पूस
जीव के जंजाल बुझाता
कपड़ा, कमरा केतनो होखे
जाड़ कहां ई जाता।
गुन–गुन गीत सुनावे 'गुंजन'
कली–फूल मुसकाता
आंखि–पांखि सब सीति से भींजे
मार के मन मुसकाता।।
सून भइल बा रास्ता–पेड़ा
घर में लोग लुकाइल बा।

जाड़ हिलावे हाड़ बाप रे आफति पीयल–खाइल बा।

❍ बेतिया, बिहार।

गीता चौबे गूँज

माटी के बा देहिया

कइलू काहे गुरूर गोरिया,
माया हई ठगिनिया।
माटी के बा देहिया गोरिया,
माटी के बा देहिया।।

उजर माटी, करिया माटी,
चाहे माटी लाल।
सीरत बिना सूरतिया होला,
जइसे मउअत काल।।

रख लऽ तनिका नेह गोरिया,
सब से करऽ पीरितिया,
माटी के बा देहिया गोरिया,
माटी के बा देहिया।।

ई दुनिया के लोगन बाड़े,
प्रभुजी के संतान।
नाच नचावले अंगुरी पऽ,
सबका के भगवान।।

नाटक के सभ खेल गोरिया,
इहवां सभे खेलड़िया।
माटी के बा देहिया गोरिया,
माटी के बा देहिया।।

प्रेम–छोह भा दाया–माया,
ई असली जागीर।
एकरा से जे मुँह चोरइबु,
मिली हिया में पीर।।

नीमन इहे सनेस गोरिया,
भर–भर ले लऽ अँचरिया।
माटी के बा देहिया गोरिया,
माटी के बा देहिया।।

❑❑

❍ राँची, झारखंड

नवहा–वर्णन

संजीव कुमार त्यागी

दोहा–

पूजन करि फैशन चरन, कलयुग के धरि ध्यान।
करब आजु हम आधुनिक, नवहन के गुनगान।।

करनधार जे देस के,जे भबिस्य के सान।
उनकर लच्छन अब सुनीं,स्रोता गुनी सुजान।।

चौपाई–

बाटे बहुत गँभीर बेमारी, लफुवन संगे करस इयारी।।
बबुआ घर में रहस इकोरा,लागस कउआ–कट्ट टिकोरा।।

रात–रात भर करवट फेरें,घूम–घूम के घोड़रज घेरें।।
मोबाइल में दरद बजा के,मॉकस हरदम लीड लगाके।।

सतरह बेर मुखौटा धोवें, आहे पर नित गरई टोवें।।
देखत कॉपी कलम डेरालन,रोज तबो इस्कूले जालन।।

खलिया जइसन देह बनइहें, बाकिर गोरस देख ओकइहें।।
बर्गर मोमो पिज्जा बीयर,लील मेंग अस भइलन पीयर।।

किसिम–किसिम के काकुल काढ़ें,महतारी पर खूब दहाड़ें।।
सरके पाँयट लउके कच्छा,ड्रेस इहे सबसे बा अच्छा।।

चिरकुट जीन्स सटाकी झारें, डियोड्रेंट लोटा भर ढारें।।
अँइठ–अँइठ मोबाइक हाँकस,
मिनट–मिनट पर गुटखा फाँकस।।

रोज पाँच गो रील बनावें,चौट करें दिनभर बतियावें।
घूम–घूम के खेत चरेलन, पनरह गो से प्यार करेलन।।

एगो के ऊ क्रश मानेलन,ओके दिल–गुर्दा जानेलन।।
ओही पर रोवें आ गावें, उल्टा सीधा शेर बनावें।।

काम काज से देह चोरावस,सुबह–शाम चट्टी पर धावस।
धरम–करम के फेंकस फंदा,पूजा करस माँगि के चन्दा।

रचि–रचि के पण्डाल बनावें,मूरति धरि रण्डी नचवावें।।
टूर्नामेंट नियन आयोजन, खातिर ततपर रहिहै हर छन।।

गली–गली बेलवरवा बीनस,
कहस बिधायक हमके चीन्हस।।
मन्त्री–सांसद सीधा जानस, इनका के लइका अस मानस।।

आपन किर्तन अपने गावें,बोली से गोली बरसावें।
साँप–गैंग के छाप चननिया, हवन मेम्बर बनल अठनिया।।

पिस्टल तोप कचहरी थानें, एसे नीचे बात न जानें।।
इनके भावे गुण्डा संगी,नीच बात लइकी अधनंगी।।

फूहर गीत झूम के गावें,डीजे सुनते डाँड़ हिलावें।
पिचकल पेट बन्हाइल गोला,
बिन सुट्टा साफे ना होला।।

वाट्सएप के गान्ही लागें,बारह बजे सूत के जागें।
बाहुबली अवतार कहालन,तिलचट्टा से भाग परालन।।

बाबू के छाती पर धाँगें,झूठ बोल के पइसा माँगें।।
कंचन कचरे कोचिंग जालन,
विद्यालय में डॉन कहालन।।

सबके आपन रोब देखावस,
घर भर से इंग्लिश बतियावस।।
डाल–डाल भँवरा अस डोलें,
सीटी मारि कुबोली बोलें।।

गाँव गिरांव न इनके भावे,सपना में बम्बइये आवे।।
हूम–जाप से खूब घिनालन,फिल्मी हीरो देव बुझालन।।

बबुआ जीभ चाम पर फेरे,करे पार्टी साँझ– सबेरे।।
सोचेला कुछ मोका पाइत,
अम्बानी छन में बन जाइत।।

फेसबूक पर तितली खोजे, प्रोफाइल बदलेला रोजे।।
अजुवे नया बनइले बाटे,नॉव जनाना धइले बाटे।।

अपना मति से ई कुछ लच्छन,गिनले बानी
सुन लीं सज्जन!
बूझि लेइब देखत ई झाँकी,नवयुग के
नवहा हउवन ई।।

दोहा–

आवत पाम्हीं मोछ पर,पाँखि गइल बा जाम।
त्यागी आगे लाल के,हवें भरोसा राम।।

❑❑

❍ ग्राम–लद्दूडीह,
जिला–गाजीपुर उत्तर प्रदेश

जीवन के परम सच्चाई के खोज

डॉ मयंक मुरारी

महानता के घर कहाँ बा? सामान्य रूप से जब हमनी के कवनो आदमी के महान समझेनी जा त ओकर पद, ओकर पहचान, ओकर प्रसिद्धि भा धन के बारे में सोचेनी जा। खाली उहे कारण हमनी के दिमाग में आवेला, जवन बाहरी होखेला। चीनी दार्शनिक लाओत्से के विचार बा कि हमनी का ओह उत्कृष्टता के महान भा महान ना कह सकीले जवना के छीन लिहल जा सकेला. उत्कृष्टता कवनो बाहरी वस्तु भा कारण पर निर्भर ना होला. हमनी के एहसे श्रेष्ठ बानी जा काहे कि हमनी के लगे सत्ता बा। हमनी के महान बानी जा काहे कि हमनी के लगे पद बा। बाकिर ई सब उत्कृष्टता के मापदंड ना ह. हमनी के अपना भीतर के गुण आ शक्ति के चलते महान हो जानी जा। प्रकृति खुदे पैदल यात्रा करेले आ मिलजुल के सगरी जीव आ गैर–जीव कार्यात्मक हो जाले. फेर एक चरण में प्रकृति सबके छोड़ देले। अब ओह अवस्था से उठल हमनी के प्रयास पर निर्भर करेला कि हमनी के ऊपर उठल चाहत बानी जा कि जइसे हमनी के पैदा भइल बानी जा ओइसने मरल चाहत बानी जा. ओह अवस्था में आदमी के विकास हमनी के अपना भीतर के गुण, संभावना आ अवसर के प्रति जागरूक आ जागरूक होखे पर निर्भर करेला। इंसान के देह से भर के इंसान ना बनेला। ओकरा सबसे बढ़िया होखे के पड़ी. एकरा खातिर यात्रा करे के पड़ेला

उत्कृष्टता खातिर ज्ञान जरूरी बा। ज्ञान मुक्ति के रास्ता ह, लेकिन उ ज्ञान ना जवन हमनी के दोसरा से लेवेनी। हमनी के भीतर से जवन ज्ञान आवेला उ हमनी के चेतना के माध्यम से प्रकट हो खेला। उ निस्संदेह मुक्ति के ओर ले जाला। ऊ ज्ञान कइसे मिल सकेला? ई जरोस्थियन धर्म के उत्पत्ति करे वाला जरोस्थियन के आखिरी समय रहे। उ चेलन के बोला के कहले कि आखिरी प्रवचन अभी तक देवे के बा। उ आखिरी वाक्य कहले – जरथुस्त्र से सावधान। चेला लोग पूछले कि एकर मतलब का बा? फेर कहलन कि हमरा के पकड़ मत, ना त रउरा सच्चा ज्ञान से वंचित रहब, जवन रउरा भीतर से पैदा हो सकेला. हमनी के साहित्य में इहे बात दोसरा तरह से कहल गइल बा दृ एकम सत्य विप्रः बहुध वदन्ति। सच्चाई त एक बा लेकिन एकर कई गो नाम बा आ ओकरा के खोजे खातिर जागल रहे के पड़ेला। पूरा जिनिगी सतर्क होके चले के पड़ेला। कवनो बाहरी ज्ञान हमनी के संतुष्ट ना कर सकेला।

अब तक के जीवन के सफर में हम ई सीखले बानी कि हर पल के साथे हमनी के लगे जिज्ञासा, परिवर्तन आ परिवर्तन खातिर प्रेरणा के तत्व आवेला। हर पल से जुड़ल घटना हमनी के जीवन के रूपांतरण में अहम भूमिका निभा सकेले। ई परिवर्तन पल भर में हो सकेला भा लमहर समय से चलत अभ्यास के परिणाम हो सकेला. हो सकेला कि एकरा में एक जनम भा कई गो जनम लाग जाव. बाकिर अंत में व्यक्ति के खुदे आत्मसाक्षात्कार खातिर प्रयास करे के पड़ेला। आचार्य अलर कलाम के संगत में महात्मा बुद्ध बुद्धि के कई गो क्षितिज के स्व–साक्षात्कार कइले। तब गुरु उनका से भिक्षु समुदाय के नेतृत्व करे के कहले। महात्मा बुद्ध कहले कि हमरा के अपना संगे राख के जवन शिक्षा देले बानी ओकरा खातिर हमार धन्यवाद स्वीकार करीं, लेकिन सिद्धार्थ के लक्ष्य कवनो संप्रदाय के नेता बने के नईखे, बालुक सच्चा मुक्ति के रास्ता खोजल बा।

जीवन में पुरुषोत्तम बनावल आसान ना होला। मानव जीवन में शिखर पर पहुँचे खातिर पैदल चले के पड़ेला। बाहरी यात्रा जवना में अनगिनत सच्चाई मिलेला आ भीतर के यात्रा जवना में ओह सच्चाई के आधार पर जीवन के दिशा देबे के पड़ेला. श्रीराम के जीवन हमनी खातिर पुरुषोत्तम के सफर के सबसे बेहतरीन उदाहरण बा। श्रीराम खुद विष्णु के अवतार हवें। भारत के सबसे बढ़िया राज्य अयोध्या के राजकुमार ह। ओह लोग खातिर सब कुछ आसान बा. एकरा बावजूद 15वां साल में दशरथ से अनुमति लेके तीर्थ यात्रा के माध्यम से देश भर में घूमले। पूरा देश के देखीं, जानीं आ समझीं। भारत के सांस्कृतिक आत्मा के खोज में। एह यात्रा के बाद जब ऊ लोग वापस आ जाला त अंतरात्मा के उपलब्ध हो जाला, ओह लोग में बेरुखी पैदा हो जाला. तब राम एगो तार्किक वैज्ञानिक नियर चिंतन करेलें, जहाँ ऊ विज्ञान से अध्यात्म के पराकाष्ठा पर पहुँच जालें। श्रीमद्भगवद्गीता से पहिले के योगवशिष्ठ अइसन मंथन के एगो बड़हन किताब बा। एकरा बाद जीवन के अलग–अलग चरण में भारत के महान ऋषि लोग जइसे कि वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, भारद्वाज, कानवा, परशुराम, अगस्त्य, अत्री के मार्गदर्शन मिलल। तब सांस्कृतिक परिवर्तन के विशाल

प्रक्रिया में राम के सहभागी के रूप में लेके एगो पूरा समाज जीवंत हो जाला। श्री राम जवना तरह से अपना विचार आ विवेक के आधार पर पुरुषोत्तम के यात्रा के आरामदायक बना दिहले, श्री कृष्ण के ओह समाधान खातिर गीता में विश्व रूप के प्रकट करे के पड़ेला। बतावल जाता कि विश्वामित्र के संगे उनुका के भेजे के फैसला कईला के बाद दशरथजी श्रीराम के फोन क के पूछले कि आजकल उ सभ रचना से उदासीन काहें बाड़े? राम के कहनाम बा कि आदमी जीवन में जवन कुछ भी करेला ओकर अंततः क्षणिक परिणाम होला आ मौत के ओर ले जाला। जीवन में कवनो चीज के स्थायी उपलब्धि ना होखेला। एह क्षणिक जीवन के सभ क्रिया विरोधाभास, विसंगति आ विरोधाभास से भरल बा। पइसा, यश, सत्ता आ पद सभ के जिनगी में आपन–आपन विरोधाभास होला। कवनो समझदार प्राणी एह क्षणिक सुख से जुड़ल काहे चाहत होई?

कुछ अइसने सवाल नचिकेता जी उठवले बाड़े, अर्जुन महाभारत के रणभूमि में संदेह पैदा करेले अवुरी ए युग में तथागत के भी कड़वा सच्चाई के सामना करे के पड़ेला। बाकिर पुरुषोत्तम कइसे बन जाला? एकरा खातिर श्री राम के जीवन के दर्शन करे के जरूरत बा। कईसे ? ब्रह्मर्षि योग वशिष्ठ में कहले बाड़न कि ना त मन के संसार के काम में लगा के शांति मिलेला ना ओकरा से मुँह मोड़ला से। बाकिर जे एह दुनु परिस्थिति से अलगा होके जिनगी के सोच आ विवेक से देखत बा ऊ ब्रह्म सत्य के दर्शन के हकदार हो जाला. शिखर तक जाए के सफर के दू गो चरण होला। एगो, वैज्ञानिक चेतना पर आधारित मौ. लिक विचारन के साथे आत्म–प्रकटीकरण आ दूसरा, विचार आ विवेक से अध्यात्म में प्रवेश कइल। राम के जीवन के ध्यान से अवलोकन करीं। ऊ कबो अपना के पुरुषोत्तम के रूप में ना पेश कइलन, जेकरा के अवतार कहल जा सकेला. हमेशा जीवन के जटिलता के बीच खड़ा आम आदमी निहन चलेला, आम लोग से बराबर संबंध बनावत। समाज के साथे सामंजस्य आ न्याय के औचित्य के आधार पर हर शब्द आ काम के प्रतिस्थापन करेलें। ऊ अवतार बा, बाकिर सावधानी से कदम रखेला

कवनो भागदौड़ नइखे। पुरुषोत्तम के सफर पर पूरा मौलिक विचार करेले, पुरुषोत्तम के मंच पर भी समाज के सोझा छोड़े के विकल्प हमेशा रखेले। ऊ बतावत बाड़न कि पुरुषोत्तम के सफर हमनी के जीवन के सच्चाई के आत्मसात करे में छिपल बा. जीवन एगो चेतन व्यवस्था ह जवना में खाली जड़ता ना होला बलुक चेतना भी होला। ऊ गतिशील बाड़न. जिनिगी के आपन दर्शन होला। एह दर्शन के कुछ शाश्वत सूत्र हमनी के जीवन के सच्चाई बतावेला, जवन हमनी के पुरुषोत्तम के यात्रा में सहायक हो जाला। पुरुषोत्तम के मार्ग उहे ह जवन विशाल मानव समाज खातिर सुखद आ शुभ बा। जीवन के रहस्य के सुलझा के दिव्यता के ओर आरोहण करीं। सच्चाई के खोज हर युग में नया तरीका से होला। मर्यादा में राम, कर्म में कृष्ण, करुणा में बुद्ध, अहिंसा में महावीर, अद्वैत में शंकराचार्य, भक्ति में रामकृष्ण आ सत्य में गांधी। पुरान सब खोज एगो रास्ता देखावत बा, हमनी के कदम खातिर, हमनी के युग के सच्चाई तक पहुंचे के। हमनी के अपना विचार, कल्पना आ सपना के बुन के, ओकरा के पीछा करत आ अपना में उतार के ही जीवन के वास्तविकता के सृजन करेनी जा। अगर हमनी के सचमुच देखत बानी जा त हमनी के आपन सपना, आपन दृष्टि अवुरी आपन विचार के अलावे कुछूओ नईखीं। अपना हर कदम के पूर्णता से जोड़ल शीर्ष पर जाए के सफर ह। पूरा ब्रह्मांड हमनी खातिर एगो किताब ह, आ एकर अलग–अलग आयाम ओह किताब के अलग–अलग पन्ना ह। शिखर तक के सफर कवनो एक राह भा कवनो एक शिक्षा से संभव नइखे. हमनी के जेतना एह प्रकृति के अध्ययन करब जा, एह ब्रह्मांड के घटक के समझब जा, हमनी के यात्रा आसानी से पुरुषोत्तम तक पहुंच जाई।

❑❑

❍ राँची, झारखंड

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता सहित्यांगन

भीखम के माई

डॉ रजनी रंजन

भीखम के गंगा माई से खूब प्रेम रहे।सब मन के दुख माई लगे बइठ के अकेल. हीं कहस आ जब मन शांत हो जाय तब घरे जास। आजुवो आपन वेदना बखाने खातिर पहुँचल रहलन।ओह घड़ी गंगा जी के अरारी कट–कट के गिरत रहे ।भीखम देख के दुखी रहलन। उनका चिंता रहे खेत के कटान होई त पानी बढी, तब खेती ना हो पाई ।बाकी उनका गंगा जी पर विश्वास रहे। गोर ला. गिला ए गंगा माई! हमार इज्जत अब रउवें हाथ में बा। बाल बच्चन के पेट के कुलबुलाहट बुझब।

भीखम गरीबी के धाह अपना लइकन पर ना लागे देवे के चाहत रहलन। एही से लइकन सभन के सभ मनसा पूरे के पूरजोर कोशिश करस।एकरा खातिर कय बार उनका करजा लेवे के पड़ गइल।

बाबूजी के मेहनत आ लइकन सब के मस्ती, आपना आपना जगह ठीके चलत रहे।

भीखम के खेत अबकी गंगा माई के कटान से अइसन खरुआइल कि बोआई त भइल बाकिर आँकुर ना फूटल। मेहनत आ पइसा दूनो बरबाद हो गइल। भीखम मने मन बड़ी दुखी रहे लगलें। जी जान लगा के मेहनत करस लेकिन परिवार के मनसा पूरा ना कर पावत रहलन। दुनो बेकत आपन देह दशा के सोच छोड़ के लइकन के मनसा पूरे में लागल रहस। चिन्ता आ पूरा भोजन के अभाव में भी खम त खटिये ध लेहलन ।साल बीतल त तनी उमेद बढ़ल। अबकी फसल नीमन होई,पर इहो बेकार हो गइल। बीमार आदमी से जोतल–बोअल के काम कइसे होई? ई सोच के उनकर मन करुआइन हो गइल। अचानक भीखम के आँखि चमक गइल।आपन लइकन के खयाल आवते उ सोचे लगनी कि हम ना त हमार पीढ़ी! मन में तोष आ गइल। ऊ जोर से हँकरनी ''ए बचवा!बबूनीऽऽऽ!'' काऽऽऽ?– ओनही से आवाज आइल।''हेने आव!'' आवतानी।

तनी देर बाद दरस अइलन पीछे–पीछे हरस आ सरस भी। माई ननकी के हाथ ध इले घुसत पूछे लगली–''का भइल जी? काहे खातिर अकुआइल बानी''। 'आरे ना हो! जेकर तिरलोक ओकरा कवन दुख'–तनी तबेत ठीक नइखे आ जोताई के दिन बीतल जात बा एही से बोलवनी ह। हम त पहिले सुकुल से कहनी ह उ हमार बात ना टारेलन बाकिर अबकी ई काम खातिर ऊ पाँच हजार रुपया मा. ंगत बारन, आ हमरा बीमारी में अइसहीं पइसा ढेर खर्च होता। आज हमरा मन में एगो बात आइल ह– उहे कहे चाहतानी।त कहीं ना? एतना घिरनी काहे बनावत बानी। माई कऊंच के कहली। तीन तिरलोक आ एतना बिचार?हुँह! रउरो नू, अजीब बानी।

सुकुल कहलन ह– पइसा नइखे त अपना लइकन के खेत में काम करे खातिर कहीं । परीक्षा त सभे पढेवाला लइका देता आ आपन घरो के काम करऽता। राउर लइका सभ पढ़ाई के नाम पर निठल्ला घुमतारन। नौकरी कब ले होई आ होई कि ना ,इहो केहू ना जानत बा।एह से लइकन के काम सिखाईं। रउरा के सगरी गाँव आदर करेला हम त एगो संघतिया आ मोलाजिम बानी। बाकिर पइसा के मामला में हम केहू से दोस्ती ना करेनी। हमरो परिवार हमरा एही धंधा से चलेला। सौ पचास कम होई त चली लेकिन ओकरा से अधिका ना।एतना कहके ऊ हाथ जोर देहलन आ चल गइलन।

अब तू लोग का कहतारऽ। बाप के पइसा पर मजा करे वाला बच्चन के बड़ी खराब लागल। ओह घड़ी त कुछ ना कहले बाकी उनहन के मुँह देख के बाबूजी बूझ गइलन–लाचार के बिचार करकट' मरुआइल बाप झवान हो गइले।

एक महीना के भीतर तीनों लइका अपना नोकरी लगला के बात कह के शहर चल गइलन। माई बाप खुस त रहलें,बाकिर अकेल जिनिगी के सोच के मुरझा जात रहलन।गइला के बाद लइकन के खोज खबर ना मिलत रहल।कभो कभो उहे लोग गाँव के पोस्ट आफिस में फोन करत रहन। घर के स्थिति देख के

भीखम सबसे पहिले बेटी के बिआह पर जोर देहले। भीखम के बेवहार के कारन जल्दिए बेटी के बिआह ठीक हो गइल। लइका लोग नया नोकरी में छुट्टी ना मिली –ई वास्ता दे के दू दिन खातिर आइल। । कइसहूँ बेटी के बिआह से भीखम निबट गइले। कुछ खेत पथार गिरवी रखे के पड़ल। अचानक एक दिन तीनों लइका घरे आ गइले।भीखम के बुझात ना रहे कि तीनों एकसाथ कइसे। बाकिर कुछ कहलन ना। दुसरका दिन खाये घड़ी आखिर भीखम पूछ लिहले–कय दिन के छुट्टी बा। दरस कहलन– एक महीना बादे जाएम सन। अबकी कह के आइल बानी सन। भीखम के साठ बरीस अइसहीं ना बीतल रहे। तबो चुप रहलन। दुसरका दिन से तीनों लइका खेत के काम में जुट गइलन।

सुकुल एह काम में ऊ लोगन के मदद करत रहलन। माई के दुलार कबो लोर बन के बरसे त कबो पकवान बना के।

एकदिन दरस कहलन– जाये के मन नइखे माई। माई के दुलार बरसल–हमहूँ तऽ इहे कहतानी – आपन घर में जे मिले से भोग। एही जे रहके बाबूजी जइसन मेहनत करके जे तोष पइब लोग उ अनकर चाकरी में ना मिली। जे रोगिया के भावे से बैदा फरमावे, माई के दुलार से भर के आपन जुगत लगा लेहलस लोग। एकबेर फेर भीखम के गंगा माई के किरपा बुझाइल। नेह आ बिस्वास बढ़ल।
खेती एहबार खूब भइल।

तीनों लइका के मेहनत से दिनोदिन सब खेत लहरे लागल। धीरे धीरे घर के स्थिति सुधरे लागल।कटान से पहिलहीं बचाव के तइयारी हो जात रहे। सब बढ़िया चले लागल।

एकदिन सुकुल आके कहलन – दरस के हम अपना साला के दामाद खातिर मन बनवले बानी बिचार करीं त हम सरहज आ साला साहेब के बोला लीहीं। भीखम कहलन–तनी दरस से पूछ लीं ? सुकुल बीचे में बात काट के कहलन–पुरनका बात मत दोहराईं। जहाँ माई–बाप के काम बा ओकरा के रउआ करीं आ दरस जब मना करिहें तब कारन पूछब। ओही घड़ी दरस घर में घुसलन। परनाम चाचा! का हो! खूब खुस रहऽ।सब ठीक बा नू। तहरा के बान्हे के उपाय करतानी। केकरा से बात करेम तहरा से कि तहरा बाबूजी से? दरस कहलन–एमें हमार कवनो जरुरत नइखे। रउरा बाबूजी से बात कर लीहीं।

भीखम बेटा के बात सुन के गदगद हो गइलन। ए बबुआ लइकी गाँव के बाड़ी आ तहार नोकरी के का होई? तब दरस अपना बाबूजी के हाथ ध के कहे लगवें। एतना दिन से हमनी के गाँवे में बानी सन अब कहाँ नोकरी? फेर सुकुल के तरफ देख के कहे लगलन– सुकुल चाचा जी हमनी के आँख खोल देहनी ना त हमनी के भरम के दुशाला ओढले रहीं। गाँव से जे नोकरी के कहानी गढ़ के हमनी के तीनों भाई शहर गइनी सन कहीं काम ना मिलल। अंत में एगो वेयपारी के फारम हाउस पर खेत में काम मिलल।मरता का नहीं करता उहे काम करे के पड़ल। राउर देवल सुख आ दुलार रोज रात के आँखि से बहे। रोज अपना मति के कोसत रहीं स। बाकिर उहाँ खेती के नया मशीन आ बिजनेस के तरीका सीखे के मिलल। ओही घड़ी हमनी के तीनों भाई बिचार कइनीसन कि कबो मौका मिलल त अइसहीं खेतियेबारी से कमाई कइल जाई। घर के इयाद अइलो पर शरम के मारे ना आवत रहीं सन। एकदिन संजोग से सुकुल चाचा अपना साला साहेब के साथे फारम हाउस से अनाज कीने खातिर कइनीं। हमनी के खेत में काम करत देख के खूब सुनवनी। बाबूजी माई के तेयाग परिश्रम के गलत फायदा उठवला के ई दिन के आवे के कारन बतवनी। इहें के हमनी के आँख खोल देहनी। फेर उहाँ आफिस से नाम कटा के घरे आवे के टिकट करा देहनी ऊ सब पइसा हम चाचा के कुछ दिन पहिलहीं लवटवनी ह। रउरा के जिनिगी भर हम ना भुलाएब।''भुलाये सुलाये के बात छोड़।बड़ के मान रखिह इहे हमरा खातिर बड़ बात होई''–बीचे में सुकुल चाचा कहलन। आगे कहलन –ओही दिन से हमार साला इनका पर नजर रखले रहन। इनकर बदलल बुद्धि के बारे में जनला के बाद उ बात कहलन ह। आगे ऊ खेतिहर मशीन ओशीन सब इनका खातिर जुगाड़ करवा दीहें।बिजनेस में उ मास्टर हउअन।भीखम के सुकुल में गंगा माई लउके लगली। गंगा माई खेत के अनाज ले गइली बाकिर तीनों बेटा में बुद्धि आ प्रेम उपजा गइली। भीखम सुकुल के हाथ धऽ लेहलन आ आँखि से बहत लोर उनका सहजोग खातिर अशीषत रहे। अचानक भीखम सुकुल के कहले'' त अब देर काहे। दरस के माईइइ! कुछ घर में मीठ बा त लेके आव।'' दरस के माई हाथ में गुड़ के भेली ले के अइली।का भइल जी? का बात बा? बडा हरियर लागतानी लोग। सास बनब ? –हँसत सुकुल कहलन।हँ ! काहे ना।अब सास बने के उमिर तऽ अधिके जाता। सभे हँसे लागल।दरस आवतानी कह के उहाँ से चल गइलन।अब तीनों जने मिल के बिचार कइले आ साला साहेब के बोलावे के दिन फाइनल हो गइल।

भीखम के गंगा माई पर बिस्वास आउरो बढ गइल। सुकुल से उनकर छोट भाई जइसन रिश्ता रहे जेहपर उनकर उनका बेटवन के सुधिया के घरे ले आवे के काम आपन भाई के मोहर हिया से लग गइल।

छेंका भइल आ ओकरा तीन दिन बाद भीखम आपन शरीर तेयाग देहलन बाकिर मरे से पहिले तीनों लइकन के हाथ सुकुल के हाथ में धइले आ कहले –''आज से भीखम के पगड़ी सुकुल के माथ रही।तू लोग इनका में हमरा के देखिहऽ – कहते लुढ़क गइलन। गंगाजी में उनकर राख देत घड़ी सुकुल हाथ जोड़के के कहे लगलन–ए माई अपना बेटा के अपना कोरा में लींहीं। बाकिर उनकर अंश के रक्षा रउरे हाथ में बा।

गंगाजी जी अजुओ उफान पर रहली। जइसे भीखम के ओही खेत के मेड़ पर बइठावे के चाहत रहली। अचानक सुकुल के बोल फूटल–

जय गंगा माई,
भीखम हमार भाई ,
जे धरती आई ,
उ खाई पकाई,
जीही जुड़ाई,
अंतकाल आई,
रउरे कोरा जाई,

❍ घाटशिला, झारखंड

बदला

अभियंता सौरभ भोजपुरीया

पिंकी आ सोनू (समीर) के मुलाकात एगो शादी पार्टी में भइल । पहिले के मुलाकात में दुनो बिना सोचे समझे एक दूसरा के दिल दे दिहले ।

साच पूछी ता समीर जान बुझ के पिकी के करीब गइलन । समीर के काम रहे भोली भाली लइकिन के अपना प्रेम जाल में फसा के जिस्म के भुख मिटावल।

पिंकी तु बहुँत खुबसूरत बाडू ...तहरा खुबसूरती पर एक जन्म ता का हजार जन्म हम कुर्बान हो जाई.... सोनू के बात सुन के पिंकी ए तु मुस्लिम हवा का ... इ उर्दु काहे बोलत बड़ा .. हमरा तहार जान ना प्यार चाही प्यार । दु चार मुलाकात का भइल मुवे लगला हमरा खातिर पिंकी इतरा के कहली ।

का तहरा हमरा प्यार पर विश्वास नइखे । हम बहुँत जल्दी तहरा से शादी करी के आपन बना लेम । पिंकी के गाल सहलावत सोनू कहले । सोनू के चिकन चिकन बात में पिंकी खो गइली सपना के दुनिया में । सोनू के हाँथ कब पिंकी के नाजुक अंग से खेले लागल मालुम ना चलल । होश आवते पिंकी अपना के दुर कर लेहली ।

धीरे– धीरे मुलाकात बढ़े लागल ।आ हर मुलाकात में नजदीकी कम होखे लागल । हर मुलाकात में जिये मरे के कसम खाये साथ निभावे के वादा होखे लागल । शादी,बच्चा,घर के सपना सब आपन होखे लागल। सोनू शादी के झांसा दे के पिंकी से जिस्मानी रिस्ता बनावल शुरु कर देहले । जब पिंकी के सब कुछ लुटा गइल ता पता चलल की ई सोनू ना समीर ह । बहुँत रोवली बाकिर आब पछता के भी का होई ।

पिंकी समीर (सोनू)से दुर होखे लगली । बाकिर समीर शादी के वादा आ आपन धर्म परिवर्त्तन करे के कही के पिंकी के मना लेहले ।

समीर मेरठ के रहे वाला रहले । घर में माईं बाप बीबी आ एगो बच्चा रहे । आ दिल्ली में अच्छा पद पर काम करत रहले । घर से सुखी सम्पन रहले । विद. ेशी संस्था के एजेन्ट रहले । जवना के मक्सद गैर मुस्लिम लड़किन के प्रेम जाल में फसा के भा जबरन शादी कइल रहे । बाकिर पिंकी इ सब से अंजान रहली । उ पिंकी से अपना के कुँवारा बतवले रहे ।

पिंकी पैसा आ पद आ सराफत के जाल में मोहीत हो गइली । शादी के बात सुन के आ आपन सब कुछ लुटा देहली। धीरे– धीरे वक्त के पहिया चले लागल । अब पिंकी समीर के जब मिलन होखे ता शादी के बात होखे लागल । पिंकी जिद करे लागली । हर बार समीर कवनो नया बहाना बना देस । एक दिन बहुँत जिद्द कइला पर समीर मंदिर में शादी करी लेहले । आज पिंकी बहुँत खुश रहली । शाम के समय रहे । पिंकी सोहाग रात्त के तइयारी करत रही । तब ले दरवाजा पर बेल बाजल सोनू दरवाजा खोल लेन । ई का दरवाजा खोलते सोनू के तीन चार आदमी घेर लिहलस। माथ पर तमंचा सटा के हाथ मुँह बाँध दीहल आ पिकी के साथे बारी – बारी जिस्म के भुख मिटा के भाग गइल । आज पिंकी ए बेर फेर से आपन इज्जत गवा दिहली । दर्द में मारे चिखत चिलात रहली । समीर समझा के चुप करा दिहले ।

धीरे– धीरे एक हप्ता बीत गइल । पिंकी के घर से फोन आइल की बहुँत जरुरी काम बा तु घरे आवा एक हप्ता खातीर । पिंकी हरियाणा के एगो छोट गाँव के रहे वाली रहली । आ दिल्ली में कॉल सेंटर में नोकरी करत रही। समीर से बता के उ आपन घरे चलल गइली । गाँवे उनकर मन ना लागे ।आपन आ आगे के जीवन के बारे में सोच – सोच के घ ाबरात रहली । कुछ काम बता के तीन – दिन में वापस देहली आ गइली। समीर के फोन कइली बाकिर मोबाइल बंद रहे । कवनो अनहोनी के डर से समीर के रूम में गइली । अरे इ का दरवाजा खुलल बा आ अंदर से दु चार आदमी के आवाज आवत बा । पिंकी के कुछ सक भइल उ पर्दा के आड़ हो के बात सुने लागली । आ आवाज पहिचान लेहली की ई आवाज ता उ दरिन्दा सन के ह जवन हमरा आबरू से खेलल रहले सन । पिंकी के पैर के नीचे के जमीन खिसक गइल रहे। देही में काटी ता खून ना रहे । उ बिना कवनो शोर कइले आपन गाँव आ गइली ।

आपन सब दुःखडा माईं से सुनावली । काहे की माई ता ममता के सागर हिय । थोड़ बहुँत गुस्सा के बाद माई शांत हो गइली । आ सुरु भइल बदला लेबे के उपाय । जब कुछ ना सुझल ता अंत में पिंकी रात के नहरिया में कुवाँ में कूदे जात रही । तब तक उनकर छोट बहिन देख लिहलस । दीदी तु रात में कहाँ जात बाडू पिंकी के दिल के दर्द बाहर आ गइल । सब बता देहली छोट बहिन से।

अगिला दिन आपस में राय करी के पिंकी दिल्ली आ गइली ।

पिंकी आपन बहिन के दोस्त बता के बोला लेहली दिल्ली । समीर से कही के पास में कमरा आ छोट मोट नोकरी दिलवा देहली । धीरे – धीरे पूजा (पिंकी के बहीन) समीर पर डोरा डाले लगली । समीर फुले ना समात रहले काहे की अबकी ता शिकार खुद आ रहल बा शिकार होखे । पूजा के साथ में समीर के ऊहे पुरान वादा तारीफ शादी के वादा पैसा पार्टी शुरू हो गइल । पूजा लूटे लगली समीर के । कंगाल करी देहली लुट–लुट के ।

कुछ दिन से जब जब समीर पूजा से मिल के आवस पेट में दर्द होखे लागल । समीर परेसान रहे लगले । बाकिर भेद खुले के डर से पिंकी के कुछो ना बतावस । एक दिन जब दर्द हद से पार होखे लागल ता बतवले । आ आपन एटीएम पिन बता के ईलाज खातिर गइले । जब जाँच भइल ता रीपोर्ट में किडनी इंफेक्शन के शिकायत रहल । डॉ आपरेसन के सलाह दिहलस । आपरेसन के तइयारी हो गइल ।

जब समीर के होश आइल त अपना के एगो बगीचा में सुतल पवले । जब आपरेसन के याद आइल ता पेट टोवले । पेट में कुछ ना मिलल ।बाकिर जब दर्द भइल ता मालुम चलल की उनकर गुप्तांग कट चुकल बा । अब समीर सोनू मोनू टोनू कुछो बने के हालात में ना रहले । थोड़ दुर पर दुनो बहिन के मुस्कुरात देखले ता सोच के हार्ड अटैक से मरी गइले ।

ई बस एगो काल्पनिक कहानी ह । ए कहानी से कवनो जिन्दा भा मुर्दा इंसान के तालुक नइखे । ई कहानी पढ़ी के अगर कवनो बेटी बहिन भा समीर के जइसन आशिक सबक ली ता लिखल हमार स्वार्थ हो जाई ।

❑❑

❍ सिवान (बिहार)

विवेक त्रिपाठी

रोक सकअ त रोकअ बबुआ

रोक सकअ त रोकअ बबुआ मनबढ़ुई कमाई के,
घाव करेज के ठीक ना हो ला अंगरेजी दवाई से..!!

एह धुन के नइखे ताल–वाल,
ना ही सरगम के खाल–वाल,
माटी से मरघट ले बाटे,
एक्केइ खेला एक्के बवाल,
सगरो राग हेराइल जहवाँ,
तोहरा के खरज मिलल बा...

रोक सकअ त रोकअ बबुआ लोग लरिका लुगाई के,
घाव करेज के ठीक ना हो ला अंगरेजी दवाई से..!!

महुई मगईचा मने मन ललचाई,
पान फुल पतइ में जिनगी ओराई,
पीढ़ा पीढ़ा धइ केतनो उतिरइबअ,
उड़े पअ चिरइया फुर्र से उड़ी जाइ,
सगरो पाँखि मुढ़ाईल जहवाँ,
तोहरा के गरज मिलल बा...

रोक सकअ त रोकअ बबुआ आपन ढींठ–ढीठाई के,
घाव करेज के ठीक ना हो ला अंगरेजी दवाई से..!!

रामे ह दूइ.....तीन अउर चारे,
एही चारि के चढि कपारे,
गिनती में आँखि मुनाइल जइसे,
जइबअ पाँच तत्व में द्वारे,
सगरो भाव भुलाईल जहवाँ,
तोहरा के लरज मिलल बा...

रोक सकअ त रोकअ बबुआ करियक्की पढ़ाई के
घाव करेज के ठीक ना हो ला अंगरेजी दवाई से..!!

❑❑

❍ खोरी, बरहज, देवरिया (उ0प्र0)

लोक के बैदई करत सरक्त आइल सकरात

शशि रंजन मिश्रा

भारत में दूगो संक्रांति मनावल जाला – तिला सकरात आ सतुआ सकरात । तिला सकरात मकर संक्रांति के कहल जाला त सतुआ सकरात भा सत्तुआन मेष संक्रांति के कहाला । दूनों सकरात नया अन्न खाये के आ प्रकृति के प्रति आपन श्रद्धा समर्पित करे के परब ह ।

लोक परब भौगोलिक परिस्थिति, स्थान आ समय के अनुरूप मनावल जाला। भारतीय संस्कृति के रीढ़ में लोकपरब नस नाड़ी के रूप में फैलल बा जे संस्कृति के रक्षा के साथे लोक कल्याण के काम करेला । आधुनिकता के छांव में एह लोक परबन के महत्व आ इतिहास भले कुम्हला जाय बाकी पुरुखन के वैज्ञानिक सोच के विशाल बरगद कबो ना मुरझाई । प्रकृति, समय आ भौगोलिक स्थिति के सटीक विश्लेषण जेतना पुरुखा लोग कह गइल बा ओतना आज के वैज्ञानिको जुग में अंदाज लगावल संभव नईखे । माटी, पानी, हवा, आकास, धूप, छाँव जईसन प्राकृतिक चीजो वैज्ञानिक यंत्र रहे ।

भारत के भौगोलिक स्थित एक नईखे । समशीतोष्ण प्रदेश कहाला । कहीं कंपकपात जाड़ त कहीं चिलचिलात गरमी । कहीं लहलहात खेत, कहीं जंगल त कहीं पहाड़ आ पठार । कुछ प्रदेश में नदी नाला आहर पोखर के जाल त कहीं सालों भर सुखाड़ । अब अईसन परिस्थिति में कवनो लोकपरब मनावे के तरीका आ समय बिलकुल अलग होला । पूरा भारत में जगह आ सुविधा के अनुसार लोक–परब के मनावे के विधि आ समय अलग बा । बाकी सभे के पाछे एके उद्देश्य इहे बा कि मय समाज एह परब में गुंथा जाव । ना बड़–ना छोट, ना छूत– ना अछूत, एह लोक–परब में सब भेव मिट जाव । लोक परब के अबूझ संसार के रीति रिवाज आ विधि के पाछे जवन पुरुखा पुरनिया के वैज्ञानिक सोच छुपल बा उ धेयान देवे योग्य बा ।

ठंढ के मौसम में शरीर के ज्यादा ऊर्जा के जरुरत पड़ेला । ठंढ प्रदेश में मांसाहार खूब होला । शाकाहारी लोग तरह तरह के मसाला, औसधी के इस्तेमाल से आपन शरीर के ऊर्जा पहुंचावे ला । आहार विहार के खास धेयान दिहल जाला कि जाड़ा के प्रकोप ना होखो । खान पान के साथे शारीरिक परिश्रमों जरूरी होला बाकी जाड़ा के मौसम में लोग ऊर्जा के अभाव में आलस्य के कोरा में बैठल रहेले । अब बदलत प्रकृति के अनुसार हरेक जीव जन्तु, पेड़ पौधा अपना के ढाल लेला आ प्रकृति के साथ समरस हो जाला बाकि मनुष्य के आपन प्रकृति बा । समस्त संसार पे विजय के चाह राखेवाला मनुष्य अपना के प्रकृति के साथ ना बदलेला आ आपन नुकसान करेला ।

आयुर्वेद के सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य के शरीर त्रिदोष सिद्धान्त पे काम करेला । त्रिदोष कहल जाला वात(वायु), पित्त (अमलध्अम्ल) आ कफ के । शरीर में इ तीनों हमेशा मौजूद रहेले । तीनों के संतुलन से ही शरीर स्वस्थ रहेला । अगर एको ऊपर नीचे भईल त शरीर के अस्वस्थ करी । अब एह त्रिदोषो के प्रकृति हरेक मौसम में एक लेखा ना रहे । कवनों मौसम में एक दोष के प्रकोप होखी त दोसरका के शमन । ढचित्रझ दोष का प्रकृति के अनुसार ही खानपान आ उपचार में बदलाव करल जाला । आसीन (आश्विन), कार्तिक महिना में पित्त के प्रकोप ज्यादा होला । पित्त आंत में पहुंचल खाना के पचावे खाति पित्ताशय से निकलेला । पित्त के प्रकृति अमलीय ह, जे खाना पचावे के काम में आवेला, लेकिन अगर एकर मात्रा बढ़ जाय त आंत के अंदरूनी परत के नुकसान पहुंचावे ला । पित्त के प्रकोप से शरीर में जलन, पेटदर्द, उल्टी, पेट के दोसरो रोग जनम लेला । आ एह पित्त के प्राकोप तब आउरी बढ़ जाला जब ठंढ भगावे के फेरा में लोग अनाप–सनाप कुपथ्य के सेवन करेला । तेज मसाला, गरम पेय, शराब आ मांसाहारो एक बड़ा कारण बा पित्त प्रकोप के । आ एह तरह के खान पान के प्रयोग बहुत पहिले से कर रहल बा । अब एह शारीरिक पित्त के शमन (शांति) पूस आ माघ के संक्रांति के समय करल जाला ।

पित्त शांति के उपाय –

प्रकृति के खेल अजीब बा । समस्या आ समाधान सब प्रकृति के दिहल बा । हमनी के पुरुखा पुरनिया एही भेद के समझ लोकपरब के रूप दे देले । मकर सकरात के दिन नया धान के चूड़ा (चीवड़ा, पोहा), दही के साथे नया फसल के गुड़, तिल के सेवन के प्रथा सगरे बा । आज के आधुनिक रिसर्चों मानेला की चूड़ा में रेशा (फाइबर) के मात्रा अधिक होला, एकरा साथे लौह (आइरन) आ कार्बोहाइड्रेडो खूब होला । पेट में जमा अम्ल आ विषैला पदार्थ के निकाले खाति

रेशेदार भोजन के जरूरत होला । चूड़ा के एक गुण आउर बा कि ई पानी के सोख के फूलेला । पेट के भीतरी जायी आ आंत के अपशिष्ट अमलीय द्रव के सोख ली आ शरीर से बाहर निकाल दी । शरीर के पाचन तंत्र के दुरुस्त राखे में दही के प्रयोग होला । एकर गुण हर कोई जानत बा । अम्ल के मारे खाति क्षार दिहल जाला । आयुर्वेद के अनुसार गुड़ में मौजूद क्षार शरीर के अम्ल के खतम करेला , एह से विपरीत चीनी के सेवन से शरीर मे अम्ल बढ़ जाला जेह से वात रोग पैदा होला । तिल के गुणधर्म में शरीर के गर्मी देवे के साथे शरीर के पोषण करेला । अब सकरात के एह विशेष खानपान से शरीर में एकट्ठा अम्ल के शमन (शांत) कर दियाला । सकरात के कहीं कहीं खिचड़ीयो कहल जाला । एह दिन खिचड़ी खाये के विधान बनावल गइल बा । दिन में चूड़ा–दही आ रात में खिचड़ी । एकरा पाछे के कारण इहे बा कि दिन के खाना के बाद जब पेट के साफई हो जाये त पेट के आउर आराम दिहल जाय। खिचड़ी सबसे सुपाच्य होला । शरीर में स्फूर्ति आ ताकत लावेला । एह से बढ़िया भोजन एह दिन के का हो सकेला त एकरे नाम पे एह दिन के खिचड़ी कहल गइल ।

पतंगबाजी –

सकरात के दिन ढेर जगह पतंग उड़ावल जाला । पतंगबाजी करेवाला के जबून मत बुझब । बहुत बड़ा साधक हवें । भारतीय साधना पद्धति में बिन्दु साधना एगो महत्वपूर्ण अंग ह । एह साधना में एक बिन्दु पे धेयान केन्द्रित कराल जाला । आँख, बुद्धि तेज करे के सबसे बढ़िया उपाय लाईकन के पतंगबाजी ह । पतंग के हरेक लोच आ कलाबाजी के साथ मन आ शरीर के तारतम्यता साधना के अनूठा रूप ह । सकरात के दिन के चूड़ा दही के भारी भोजन के खेल कूद में पाच जाय आ साथे एक साधना हो जाये , एही सोच के साथे सकरात के पतंगबाजी जोड़ दियाईल ।

सकरात खाली लोकपरब ना ह । ई पुरखन के वैज्ञानिक सोच से उपजल, मौसम के संधिकाल में शरीर के शोधे के परब ह । खात पियत खेलत कुदत एगो बड़ स्वास्थ्य रक्षा के उतजोग हो जाये आ एकरा में हिंग ना फिटकरी खाली आनंदे बरसे त इहे नू लोकपरब के असली माने कहाई । सुरूज साक्षात ऊर्जा के प्रतीक हवें, अब राशि ग्रहचाल से उनकर स्थिति जवन होखे, बाकी एह परब में उनको के पूजा करल जाला । बाकी के सब कथा कहानी ढेर लिखाईल बा ।

❑❑

❍ नई दिल्ली

डॉ बलभद्र

टिकुरी से बहावल अंखिए बर रहल बा

रामजियावन दास बावला के एगो गीत राह चलते इयाद आवेला आ मन ओह गीत के गुनगुनाए लागेला। ऊ गीत ह –" हरियर बनवा कटाला हो कुछ कहलो ना जाला।" आगे के लाइन ह –" दिनवा अजब चनराला हो, कुछ कहलो ना जाला। " हरियर बन के कटाइल एगो मामिला बा जवन रोज देखे में आवत बा। रोज हरियर गांछ –बिरिछ विकास के नांव प कटा रहल बा। बन उजड़ रहल बा। जंगल प माफिया आ कॉरपोरेट जगत के दबाव बढ़त जा रहल बा। ई सब हो रहल बा आ बावला जइसन कवि, जे किसान जगत के कवि रहल बा, किसान कवि, ऊ एह सब से दुखी आ चिंतित होत बा आ ऊ आगे आवे वाला संकट के भांप रहल बा आ जवन भांप रहल बा, तवने के गाइयो रहल बा –' दिनवा अजब चनराला हो।'

एहिजा 'चनराइल' शब्द प जरूर सोचे के चाहीं। 'भविष्य–भांपन ' के अर्थ में एह शब्द के प्रयोग होला। ठीक एही तरे हमरा सुमन कुमार सिंह के गीत के ई लाइन बारंबार गुनगुनावे के मन करेला आ हम गुनगुनाइबो करीला, ऊ लाइन ह दृ "हमरा बाबा के बगइचा रात दिने कट रहल बा।" हम सोचिला कि ई कवन बगइचा ह भाई जे रोजे कट रहल बा आ कवि एकरा के बहुत धीम अंदाज में गा रहल बा। बगइचा आ बाबा के जब बात चलल त एगो कजरी इयाद आ रहल बा दृ "हमरा ही बाबा के दुअरा प निमिया कि सब सखी लावेली हिलोरवा। " बाबा आ नीम आ बगइचा के भोजपुरी लोकगीतन में खूब उल्लेख बा आ ई असहीं नइखे। सुमन जवन बगइचा के बात करत बाड़न ऊ दू अर्थ में बा। एगो त गांछ–बिरिछ वाला ह आ एगो आदमी–जन के परिवार वाला ह। लोग अकसरहां बात बात में परिवार के फुलवारी भा बगइचा कहबो करेला। ऊ दूनो बगइचा अब कटत जा रहल बा। पेड़ कट रहल बा, आदमी से आदमी कट रहल बा। हर–हथियार अब खेलौना बन गइल बा। लोहा के खेलौना से

पेड़ आ मानुस दूनो हतल जा रहल बा। अब त जेसीबी आ गइल बा जवन पेड़न के सीधे उखाड़ देला। सुमन एह गीत में बर, पीपर प संकट के साथे साथ हारिल के ऊ डर भी देखत बाड़न जवना के चलते ओकर जोड़ा अब चौन से कतो बइठ नइ खे पावत –"काव में हारिल के जोड़ा डर से ना उतरे कबो।" काव माने ताल–पोखर के किनारा। हारिल के डर के संगे इहो बात बा कि " गाँव–गंवई के आबादी लोर पी के रह रहल बा।" बाबा के बगइचा के कटे से लेके आदमी आ चिरई–चुरुंग के संकट के साथे साथ ई बात गौर करे जोग बा कि आदमी जनमे से बेबस आ लाचार ना होला, बलुक ओकरा के बेबस लाचार बना देल जाला, परथकू बना देल जाला। ट्रेजडी अइसन कि आपन सपना आ कल्पना से ओह के बेलाग कके ओकरे साधन से ओकरे सोझा विकास के नारा देल जा रहल बा, मॉडल के बात हो रहल बा दृ "जनमे से आन्हर ना रहलीं हम भिखारी ना रहीं, आंख टिकुरी से बहा के सभके बिजुरी बर रहल बा।" टिकुरी से बहावल अंखिए बिजुरी के बल्ब अस बर रहल बा। एहिजा ई जिकिर कहल चाहब कि अइसन बात पहिले कहत रहे लोग कि मुअल आदमी के अंखिए जोन्ही बन आकाश में सारीरात बरेला। जवान आदमी के आंख चटक बरे वाली जोन्ही बनेला। सुमन एह के नया अर्थ आ संदर्भ देत बाड़न।

एहिजा रमता जी के किसान कविता के ऊ बात इयाद आवत बा कि किसान अपने कान्हा प आपन लाश ढोवे प मजबूर बाड़न। समय के एह त्रासद सांच के देखल–देखावल बहुत जरूरी बा। सुमन के एगो अउर रचना खूब जमेला। ओह में एगो माई बाड़ी, घर गिरहती संभारे वाली। मन त हो रहल बा कि पूरा बात कथा अस कहि जाईं। सचो एह में एगो मेहरारू के कथे कहल गइल बा। एह के 'स्मृति बिम्ब' कहल ठीक होई। माई के हाथ के रेखा एहमे गोइंठा तक में देखल गइल बा। गोइंठा पाथत जे देखले होई ओकरा खातिर ई अचरज के विषय ना होई। गोइंठा पाथल जाला खायक बनावे खातिर। खाना दूनो जून बनेला। गोइंठा के धुंआ दूनो बखत ऊपर उठेला। नागार्जुन के कविता 'अकाल और उसके बाद' में बा कि 'धुंआ उठा आंगन के ऊपर।'

सुमन एह धुंआ के संगे माई के हस्तरेखा के छापो आकासे उड़त देखत बाड़न। अपना 'स्मृतिशेष' माई के। ई बेलकुल नया अंदाज बा।

" माई तोहरा हाथ के रेखा,
गोइंथा में उभरल देखलीं
जब उड़े आकाश में धुंआ,
रोजे जात सरग देखलीं। "

माई प भोजपुरी में कविता खूब मिली। भोजपुरिए नाहीं, हिंदियों में, आ अउरियो भाषा में। सुमन के कविता भी ओह कतार में बिया। एह में जवन माई बाड़ी ऊ मतारी के संगेसंग बापो के भूमिका बाड़ी। हक हिस्सा खातिर आपन आवाज बुलंद करत–

"हक–हिस्सा प गोतिया–नइया,
जब–जब दीठ गड़वलें
पूरे ना देलू साध केहू के,
बन के बाप लड़त देखलीं।"

साड़ी के एक खूंट के आंचर आ एगो खूंट गेंठ परले माई ताजिनगी आस के बले खटत रहली। बाकी का कि

" सुने में आवे घर के बहुरिया,
पहिल–पहिल जब अइलू
अनजा से घर भरल रहे अस,
कबहूं भरल ना घर देखलीं।"

माई के बहुरिया बन आवे के समय के सुनल–सुनावल बात से लेके माई के अपने आंखी देखल–महसूसल बात तक एह में बा। ओह माई के बात बा जे अने–धने भरल पूरल घर ना देखली। भरे–पूरे खातिर जिनगी भर जूझत रहली।

सुमन हिंदी आ भोजपुरी में बराबर सक्रिय बाड़न। कविता आ कहानी के संगेसंग आलोचनो लिखेलें। इनकर एगो हिंदी कविता के किताबो छपल बा जेकर नांव ह 'महज बिम्ब भर मैं'। भोजपुरी के नयकी पीढ़ी के ई एगो महत्वपूर्ण कवि–लेखक बाड़न।

❑❑

❍ गिरीडीह कालेज,गिरीडीह
झारखंड

गंगिया

कनक किशोर

हमार संगम
हमार हरिद्वार
गाँव के दखिन बधार में बहत
गंगिया ह,
रोज डूबकी मार आइना
भोरे भोर
किरिनिया के धरती चुमे के पहिले।

असहूं सुनिला की गंगा में नहाये से
पाप धोआ जाला
बाकि खाली हिन्दू के
मुसलमान कहाँ जालन हरिद्वार,
बाकिर हमार गंगिया में
एक लेखा दूनो कौम
गोता मारेला
उहो एके साथे,
गंगियो एक लेखा देखेले सभका के
कवनो भेद भाव ना,
अपना जोरे बाढ़ में ले आइल माटी
गंगिया बाँट देले जहाँ ले पनिया जाला
हिन्दू मुस्लिम के खेत में
एक लेखा,
सोना उपजेला
ई पुण्य के नूं फल ह
पाप धोअइला के स्पष्ट प्रमाण,
दूनों कौम के जीवन रेखा
गंगिया के दुख
दुनों कौम के दुख
तब तऽ रसीद मियां
गंगिया से चढ़ते सावन गोहरावले
माई एगो तोहरे सहारा बा
बरसात बाद जल्दी कछार धऽ लिह
तब नूं आई
जिये खातिर
अन्न के दाना
हमरे ना गणेशो पाडे के
अँगना में।

गांव के मनई हईं
एके बधार में मक्का मदीना
आ काशी विश्वनाथ
एक दुसरा से सटले खाड़ बा,
वोही गंगिया में हाथ मुँह धो
रसीद नमाज अदा करले तऽ
गणेश बाबा घरी घंट डोलावले,
साथ ही दूनो जाना
मस्जिद के बाहर
खदेरना के दुकान पर चाय पियलन
आज ले कहियो
आपस के तकरार
ना देखे के मिलल
दूनो कौम में।

फेर ई अयोध्या
काशी, मथुरा में आपसी
तकरार काहे ?
ऐकरा पीछे के ?
रउवा बुझाता?
हँ ये मरदे
बार असहीं नइखे नूं पाकल
दिना चा कहत रहन
फिरंगिया चल गइलन सं
बाकि तोड़ आ राज करे के नीति
खादी धारण करे वाला के
दे गइलन सं
ई बतावत
एह शर्त पर कि
एकरा के अक्षुण्ण रखिह लोग
ई गइल त सत्ता गइल।
खेला बूझाइल कि ना
के खेलता,
तब नूं सुनाता
खेला होबे,
ई कवनो नया खेला के अगाज ना हऽ
उहे पुरनका जोड़ तोड़ खेला के
सिरमौर बने के
सियासत के जोगाड़ में।

आँखि खोल के देखल
संसद आ पार्टी में लड़ाई ना होखे
दूनो कौम के,
सत्ता में सहभागिता कइसे मिली
लड़ला पर।
आज विपक्ष के राजनीति खतम
सत्ता परमं धर्म
के सिद्धांत के अपनावत
जोड़ तोड़ पार्टी के गठन
सरकार आ देश हित से बढ़के

का कहीं कुछू सुहात नइखे

अशोक मिश्र

स्वहित में
जब चाहे तब हो जाता,
राजनीतिक संगम में
जब इच्छा तब डूबकी

वाह
गंगियो फेल
गजब के उर्वरा जमीन
राजनीति के उथल पुथल
मैदान के
जवना में जमीर नाम के
बीज उगबे ना करे।

सत्ता के विकेंद्रीकरण के नाम
जुठ पत्तल में बाँचल खोंचल
गाँव के ओरिया
फेंक देल गइल बा,
गंवई कुकुर आपस में नोंचा चौथी में
अझुरा गइल बा।
डर बा
राजनीति के जोड़ तोड़
कहीं गंगियो संस्कृति के
ना निगल जाय।

❑❑

❍ राँची (झारखंड)

काम–धाम बन भइल
अब जीनगी से ठन गइल
केहू के कुछू बुझात नइखे
का कहीं कुछू सुहात नइखे।

आइल–गइल रूक गइल
घाट –बाट सून भइल
कहीं केहू आवत जात नइखे
का कहीं कुछू सुहात नइखे।

दउरी–दोकान बन भइल
लोग–बाग तंग भइल
केहू से कुछू सुझात नइखे
का कहीं कुछू सुहात नइखे।

कईसन ई रोग आइल
दुनिया में फईल गइल
दवाई कवनो बुझात नइखे
का कहीं कुछू सुहात नइखे।

घरे में सभे लुका गइल
कवनो ना एकर उपाइ भइल
केहू से कुछू कहात नइखे
का कहीं कुछू सुहात नइखे।

लोग–बाग कह ता ई कोरोना महामारी हऽ
बे रूप–रंग के ई त भयानक बेमारी हऽ
दवाई एकर कतहूँ बिकात नइखे
का कहीं कुछू सुहात नइखे।

❑❑

❍ डीएवी, कैमोर
कटनी, म प्र

भोजपुरी के मान बढ़ाई, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनी
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

'पाहुर' में श्रीकृष्ण के आदर्श मैत्री चरित्र

डॉ. ब्रज भूषण मिश्र

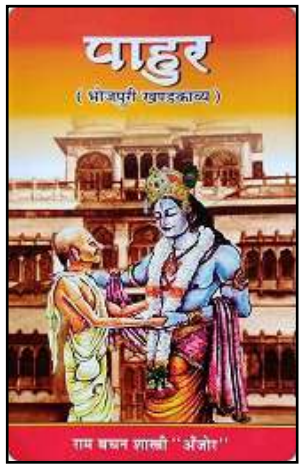

पौराणिक पात्रण में श्रीराम आ श्रीकृष्ण के चरित , कवि लोग का बड़ा प्रिय रहल बा । खास कर के प्रबंधकाव्य के रचयिता कवि लोग त राम आ कृष्ण के चरित के केन्द्र में राख के महाकाव्य आ खंडकाव्य के रचना करके बड़ा सोहरत पइले बाड़ें । एह में भोजपुरी के कवि लोग काहे पछुआइत । श्रीमद्भागवतपुराण के छोट बड़ कई प्रसंगन के आधार बना के कई गो प्रबंधकाव्यन के रचना भइल बा , जवना से प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप में कृष्ण चरित के जुड़ाव बा , बाकिर अधिकांश अइसन बा जवना में श्रीकृष्ण प्रधान पात्र भा चरित्र बाड़ें । पूरबी पुरोधा महेन्दर मिसिर के गीतन में कृष्ण आ राधा , कृष्ण आ गोपियन के प्रेम विषय बनल बा । राम विचार पाण्डेय जी के ' अँजोरिया ' नाम के कविता राधा कृष्ण प्रेम के लेके बड़ा चरचा में रहल बा । गोपीयो गीत के कई गो रचना भोजपुरी में भइल बा । हरेराम त्रिपाठी ' चेतन ' के ' उबियान ' (1969 ई.) , रामसूरत राम के ' गोपी विरह ' (1972 ई.) य रामबचन लाल श्रीवास्तव के ' श्याम शतक ' (1981 ई.) य आ चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के ' गोपीगीत ' (2018 ई .) आदि किताब हम देखले बानी जे कृष्ण के जीवन के छोट कथा अंश पर आधारित बा। ' नंद नंदन ' (2018 ई.) चेतन जी के दूसर ग्रंथ ह जवना में कृष्ण जन्म से लेके मथुरा गमन तक के कथा समेटले बा आ गोपी विरह के कारण बनत बा । कृष्ण के जीवन के एगो उद्दात अंश द्रौपदी के लाज बचावल बा । एह पर दू गो किताब भोजपुरी में आइल बा –– दूधनाथ शर्मा ' श्याम ' के ' द्रौपदी ' (1982 ई.) आ चंद्रशेखर मिश्र के ' द्रौपदी (1982 ई.) । ई सब कथा अपना क्रम में चंद्रधर पांडेय कमल के महाकाव्य – ' नारायण ' (भाग –1 , भाग –2 , 1983 ई.) आ बालेश्वर राम यादव के 'कृष्ण चरित पीयूष '(2011ई) में आइल बा , जवना में कृष्ण प्रधान पात्र बाड़न । श्रीकृष्ण के चरित्र के ऊपर लिखाइल खंडकाव्यात्मक कृति अमर सिंह जी के 'लीला पुरुष ' में ई सब प्रसंग के जगह मिलल बा । श्री कृष्ण के जीवन में उनका मैत्री भाव के उद्दातता सुदामा प्रसंग में देखाई देत बा आ कवियन खातिर बड़ा प्रिय रहल बा । दूधनाथ शर्मा श्याम के 1977 ई. में प्रकाशित ' सुदामा यात्रा ' में ई प्रसंग बड़ा ढंग से उठावल गइल । नारायण , कृष्ण चरित पीयूष आ लीला पुरुष में प्रसंगानुकूल त ई कथा आइलहीं बाटे य यदुवंशी श्रीकृष्ण के चरित में रुचि लेवेवाला आ महभारत कथा आधारित कई काव्यन के रचयिता यदुवंशी रामबचन शास्त्री 'अँजोर ' का भी कृष्ण – सुदामा – मिताई के ई प्रसंग बड़ा भावल बा । अँजोर जी ' निरधन के धन श्याम' (1982 ई.) नामक काव्य में श्रीकृष्ण के जीवन के नौ गो उद्दात अंश के ले के नौ सर्ग (देवढ़) में प्रबंधात्मकता प्रदान कइले बानी । एह में छठा देवढ़ में ' त ई पहुरा य महुरा होई जाई ' उप शीर्षक से कृष्ण सुदामा मैत्री प्रसंग के छोटहन कथा आइल बा । तिरेपन छंद के एह सर्ग में तीस छंदन में विराट पुरुष श्रीकृष्ण के मैत्री भाव के गुणगान बा आ तेइस छंदन में सुदामा पत्नी श्यामा द्वारा उलाहना आ प्रेरणा पा के भूँजल चाउर के पाहुर के छोट गठरी के साथ द्वारिका गइला आ श्रीकृष्ण द्वारा मिताई के मोल राखत सुदामापुरी के बसवला के संक्षिप्त कथा आइल बा । प्रसिद्ध विद्वान रामेश्वर नाथ तिवारी का ई प्रसंग कथा एतना भावल कि अँजोर जी के एह विषय पर एगो स्वतंत्र प्रबंधात्मक कृति देवे के प्रेरित कइलीं आ अँजोर जी एह चुनौती के स्वीकार करत पाँच सर्ग में पूरा कर दिहलीं । 'पाहुर' के पहिला संस्करण 1990 ई. में आइल आ अब दोसर संस्करण 2022ई. में आइल बा ।

ना जाने भोजपुरी के ' सुदामा यात्रा ' अँजोर जी के पढ़े के मिलल रहे कि ना ? एह खंडकाव्य में सुदमा पत्नी के गोहार आ प्रेरणा से ले के कथा शुरु भइल बा , सुदामा के द्वारिका गमन , श्रीकृष्ण से मिलन , आँखिनके बहत लोर से सुदामा के गोड़ धोवल , सुदामा के ले आइल फरुही के फाँका फाँकल , तिसरका फाँका फँकला से रुक्मिणी के रोकल , लक्ष्मी जी विश्वकर्मा भगवान के भेज के सुदामापुरी के बसावल , सुदामा के माया मोह भंग आ संन्यास अउर वन गमन के कथा सवैया छंद में आइल बा । बाकिर हिंदी क्षेत्र में प्रसिद्ध एह प्रसंग के ऊपर नरोत्तमदास आ हलधर दास के काव्य जरूर पढ़े के मिलल होई । अँजोर जी अपना काव्य में एह विषय के संदीपनी आश्रम से उठवले बानी आ पाँच सर्ग में कृष्ण से

मिल के नया सुदामापुरी बसला के बाद उहाँ लवटला तक के कथा समेटले बानी । कई गो स्थल के अपना काव्य कला से मार्मिक बना देले बानी । सवैया आ राधेश्याम छंद में रचाइल एह काव्य के पहिला सर्ग में चार सवैया आ छिहत्तर राधेश्याम छंद , दुसरका सर्ग में दुनों मिला के चालिस छंद , तिसरका सर्ग में दुनों मिला के छियालिस छंद , चउथा सर्ग में दुनों मिला के तैंतालिस छंद आ पाँचवा सर्ग में खाली राधेश्याम के अस्सी छंद बा । बाकिर , ' पाहुर ' के जवन नया संस्करण (2022 ई.) आइल बा , ओह में कई गो बदलाव कइल गइल बा । ई चंपू काव्य के तरह लागत बा , काहे से कि एह में गद्य के समावेश बा । अँजोर जी बीच – बीच में आपन बात गद्य में कहले – समझवले बानी । हर सर्ग के पद्य संख्या में अंतर बा , कवनो में कम त कवनो में बेसी । कुछ पुरान छंदन के बदले गद्य आइल बा । कुछ नया छंद जोड़ाइल बा आ कुछ हटावल गइल बा । पहिला सर्ग में तीरसठ छंद , दोसरका सर्ग में पैंतालिस छंद , तिसरका सर्ग में सत्ताइस छंद , चउथा सर्ग में अड़तालिस छंद आ पाँचवा सर्ग में बीस छंद बा । पाँचो सर्ग में क्रम से पनरह , पनरह , सात , बारह , सात जगह कम बेसी गद्य के अंश बा ।एह से ' पाहुर ' के द्वितीय संस्करण एगो परिवर्तित संस्करण बा । सबके बावजूद कथानक उहे बा । पहिला सर्ग में गुरु सांदीपनी आ उनुका आश्रम के महिमा गायन बा । आश्रम के मनोहारी प्राकृतिक के बखान बा , कृष्ण – सुदामा मिताई के पनकला के बखान बा ––

जुग द्वापर में भइलें गुरुवर ,
मुनि सांदीपनि जी नाम रहे ।
धनु – आयुर्वेद में दक्ष रहीं ,
बनवा में एकन्ता धाम रहे ।।
हर कला , विषय के जानकार ,
शिष्यन के सिखावन काम रहे।
सइ छात्र जहाँ शिक्षा पावँसु ,
दुई मीत सुदामा श्याम रहे ।।
, , ,
, , ,

डहँगी – डहँगी गावे कोइलरि ,
मधुआ में चभोरल गीतन के ।
जइसे बिरहिन लोरवा ढरका ,
गोहरावँ अपना मीतन के।।
झलके जलकुंड लगे दरपन ,
छवि मोहति शंखन – सीपन के ।
जरिए आश्रम हितगर लागे ,
ज्ञानी गुरुवर संदीपन के ।।

एह सर्ग में आश्रम के एहवार बेहवार के साथ बाल मिताई के लीला आ बाल मनोविज्ञान के बखान मिलत बा ।

दूसर सर्ग में सुदामा का घर परिवार के चित्र उरेहल गइल बा आ सुदामा के विपन्नता के सङही ओकरा कारण के पड़ताल बा । परिवार सीमित होखे के चाहीं । सुदामा के परिवार नियोजित नइखे । ई एगो सवाल उठा के अँजोर जी अपना काव्य के आधुनिक समस्यन आ संदर्भन से जोड़ले बानी । एगो बेटा के फेर में कव – कव गो बेटी हो जात बा जे परिवार चलावे में कठिनाई बढ़ावत बा । पत्नी श्यामा के साथ सुदामा संवाद के पाँति देखीं –––

बेटा खातिर जोतलू अफन्न ,
ओकर फल श्यामा पा गइलू ।
पलिले रहलू कइसे अपने ,
सुख – चौन समूचा खा गइलू ।।
, , ,
, , ,

नइखू देखत घर के दासा ,
भइल दलिदरी के बासा ।

तिसरका सर्ग में द्वारिका जाए भा ना जाए पर बातचीत के राखल गइल बा । सुदामा जाए के नइखन चाहत । श्यामा जोर देत बाड़ी कि मिताई कवना दिन कामे आई । ऊ खाली हाथ नइखन जाए के चाहत , तब ऊ माँग चाह के चाउर के भूँज के पाहुर बनावत बाड़ी आ सुदामा के दे के द्वारिका खातिर पयान करावत बाड़ी ––

सोच – सँकोच बिसार देईं ,
कहली श्यामा पग नाथ बढ़ाईं ।
पाहुर लागत रावाँ के माहुर ,
एसे न राउर होई हिनाई ।।
एकर दाम लगइहें कन्हाई ,
बुझाला हमें रजधानी बिकाई ।
ई ह भिखारिन के चउरा ,
बदले में एसे तिरलोक किनाई ।।
, , ,
, , ,

ठेंघत जात सुदामा जी राह में ,
टीसति फाटल पाँव बेवाई ।
बाड़ँ उपासल , दूजे पियासल ,
तीजे हवा उनके पिठिआई ।।
बाझति बा रहिया टँगरी ,
पँजरी दुख जा तब जा ढँगिलाई ।
उठत – बइठत , हकसत – अँहकत ,
डँहकत काँटन में अझुराई।

चउथा सर्ग में कृष्ण – सुदामा का मिताई के झाँकी बा , जवना के आधार ले के महाभारत कथा के ई अंश प्रबंधत्व पवले बा । कहाँ सोरह कला से भरल – पूरल योगेश्वर आ नटवर कृष्ण जे द्वारिकाधीश बाड़न आ कहाँ

गरीब , याचक ब्राह्मण सुदामा । दुनों में आकाश पाताल के अंतर । बाकिर श्रीकृष्ण अपना के आदर्श मित्र साबित करत बाड़न । मीत सुदामा के हालत पर दुखी होखत बाड़न ––

मीत के ले चलले भवन ,
दसा अति दीन करेज पसीजे ।
फाटत छाती प्रभू छपटात ,
कि लोरन धोती – पीतंबर भींजे ।।
रोवत – धोवत गोड़ इयार के ,
बा पछताव जे हाथन मींजे ।
एही तरे दिन पातर भाभी के ,
टूअर लागत होइहें भतीजे ।।

श्रीकृष्ण विश्वकर्मा जी के सुदामापुरी के नव निर्माण के आदेश देत बाड़न आ धन धान्य से सम्पन्न करवा देत बाड़न । तब सुदामा के विदा करत बाड़न । पाँचवा सर्ग में सुदामा गाँव पहुँचत बाड़न त देखत बाड़न कि सब बदल गइल । झोपड़ी के जगह महला दुमहला खड़ा बा । चिन्हात नइखे । पत्नी निकल के कहत बाड़ी कि ई राउरे घर ह । ई पाहुर के कमाल ह । फरुही खा के कृष्ण ई महल बनवा देलन आ धन सम्पत्ति से घर भर देलन । सुदामा मीत के एह मिताई पर भौंचक बाड़न । ऊ पूरा जगती पर श्रीकृष्ण के अहैतुकी किरपा चाहत बाड़न––

असहीं दिन सबकर फिरे नाथ ,
सुधि–बुधि आजाय अमीरन में।
दुखिया – दुरबल पर जाँ पसीत ,
फफने हिय–दया सुधीरन में ।

अँजोर जी के भाषिक संरचना आ काव्य सौष्ठव भोजपुरिया रस में पगाइल बा । देशज , विदेशज , तद्भव आ तत्सम चारो शब्दरूप के समन्वय से रचाइल बा ' पाहुर ' । छछकाल , धन खर , भूभुन , ठेंघत जइसन देशज य भीखि , बिरथा , दलिद्दर , बाभन जइसन तद्भव य आयुर्वेद , आश्रम , स्वामी , ध्यान जइसन तत्सम् आ बेईमानी , बदनाम , जाहिर , होश जइसन विदेशज शब्दन के प्रयोग मिली । आद्योपांत सवैया आ राधेश्याम छंद के विन्यास बा , जवना पर महाकवि के पकड़ बा । अनुप्रास , विप्सा , उपमा , ध्वन्यार्थ व्यंजना जइसन अलंकारन के प्रयोग मिलत बा जे सायास आइल बा ।

कुछ नमूना ––

गुरु के महिमा गगनो ले गहूँ,
गंगियो से पवित्तर बा जग में

–– अनुप्रास

सुनि काँय – काँय पँचई जागे /
कहली डरते – डरते श्यामा

–– विप्सा

कतहीं कठफोर करँ खट – खट /
बरिसेला कचाइन हड़र – हरड़

–– ध्वन्यार्थ व्यंजना

अँजोर जी खातिर श्रीकृष्ण के चरित्र बड़ा प्रिय बा । उनकर मित्र सुलभ प्रेम आ व्यवहार जिनगी में उतारे योग बा । पद के मद में चूर ना रह के , धन सम्पदा से भरला पर घमंड ना करके सबके सहजे गले लगावे के चाहीं , ई संदेश एह खंडकाव्य से अँजोर जी चहुँपवले बानी । जय श्रीकृष्ण !

❑❑

❍ मुजफ्फरपुर, बिहार

एगो लउकल हा चान

डॉ. हरेश्वर राय

बूटा गोटा वाली ललकी चुनरिया में
एगो लउकल हा चान दुपहरिया में।

आस्ते आस्ते गते गते हौले हौले ऊ
जाइ ढूकल बगल के फुलवरिया में।

दिल संता हमार भ गइल ह बेकरार
माला फेरे लगनी लेके अंगुरिया में।

मन बाकी हमार बेलगाम भइल हा
भरि लेलस ह जाके अंकवरिया में।

जाके नैना फंसल ह अलकजाल में
सोर मचल ह गउआं – सहरिया में।

❍ सतना मध्य प्रदेश

बोले में लजाइब त बिला जाइब

रवि प्रकाश सूरज

जतरा के अंतिम पड़ाव बिलासपुर रहे। अब एकर बाद घर वापसी। बाकिर ई अंतिम पड़ाव के जिकीर बहुत जरूरी बा। बिलासपुर में डॉ विजय कुमार सिन्हा जी के अलावे हमरा जेकरा से कई साल से मिले के इच्छा रहे आ जेकरा से मिलबो कईनी उहाँ के हईं देस–बिदेस के चर्चित पत्रिका 'मड़ई' के सम्पादक आ रावत नाच समिति के संस्थापक कालीचरण यादव जी। कालीचरण जी आ उहाँ के पत्रिका के बारे में लगभग सभे जेकरा साहित्य में रुचि बा उ जानत होई त बिसेस लिखे के आवश्यकता नई खे। गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के विजिट के बारे में जरूर बताईब। हाल तक राज्य विश्वविद्यालय रहल जी जी यू अब केंद्रीय विश्वविद्यालय बन चुकल बा। अरपा नदी के पार करके शहर के इलाका अंबिकापुर हाईवे प एगो जगह बा कोनी के नांव से। ओहि हाईवे प सटले सटल ४ गो विश्वविद्यालय बा। त्रिन न्चंकीलंल भाई के सहजोग से कोनिये में विश्वविद्यालय के सोझा रिवर व्यू कॉलोनी में जहाँवा रुके के बेवस्था रहे उ बेजोड़ जगह रहे जवन ओहिजा रहे वाला साथी लोगन के प्रेम के वजह से हिरदा प आपन छाप छोड़ गईल। अरुण कुमार पाण्डेय, पंकज मिश्रा, सुनील भाई, राजीव भाई, अभिषेक भाई, रवि भाई सभे वर्धा विश्वविद्यालय के अलगा अलगा विभाग के छात्र रहल बा आ अब कवनो ना कवनो रूप में बिलासपुर विवि से जुड़ल बा। अरुण भाई आ पंकज भाई गुरु घासीदास के यूजीसी सहायता प्राप्त लुप्त प्रायः भाषा केंद्र में शोध सहायक बा लोग। लुप्त प्रायः भाषा केंद्र विवि के मानवशास्त्र आ आदिवासी विकास विभाग के अंग ह जेकर संयोजक विद्वान प्रो नीलकान्त पानीग्राही जी बानी। एह केंद्र में छत्तीसगढ़ी के तुरी जनजाति के भाषा के सहेजे के प्रोजेक्ट चलता। कारन पूछला प मालूम चलल कि तुरी जनजाति के लोग बाँस के काम करेला आ अब आपन भाषा छोड़ी के हिंदी बोले लगले। तुरी भाषा एगो कोडिंग भाषा जइसन बा। केंद्र में लेक्चर हॉल, लैंग्वेज लैब आदि सब आधुनिक रहे। मुन्ना जी, गंगा आदि शोध छात्र से मिल के अच्छा लागल। पता चलल कि एह से पहिले प्रो पानीग्रही जी ४ गो भाषा के सहेजे के काम कर चुकल बानी। हम मजाके मजाक में कह देनी कहियो भोजपुरी खातिर अइसने लुप्त प्रायः भाषा केंद्र खोले के परी। पता ना सांचो हो सकेला जवन हाल बनल बा कि अब आपने लोगवा बोले में लजाता। बाकी केंद्र के बेवस्था आ संचालन देख के ई जरूर मन भईल कि अइसने एगो भोजपुरी के उच्च अध्ययन शोध संस्थान के जरूरत बा, पता ना कब पूरा होई। खैर, आगा हिंदी विभाग के घुमाई भईल। हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रो अनीश जी, हेड मैडम से मिलनी आ विभागीय लाइब्रेरी में किताबिन के बीचे समय बीतवनी। हिंदी विभाग से एगो बहुत बढ़िया शोध पत्रिका स्वनिम प्रकाशित होखेला। गुरु घासीदास विवि के केंद्रीय विश्वविद्यालय के नांव नालंदा ह। एहिजा के नालंदा ग्रंथागार बहुत समृद्ध बा। बिलासपुर के जतरा के आनंद से भरे खातिर हम राजू भाई, अरुण भाई, पंकज भाई आउर तमाम साथी लोग के आभारी बानी

❑❑

❍ आरा, बिहार

सदस्य
मैथिली भोजपुरी अकादमी, दिल्ली

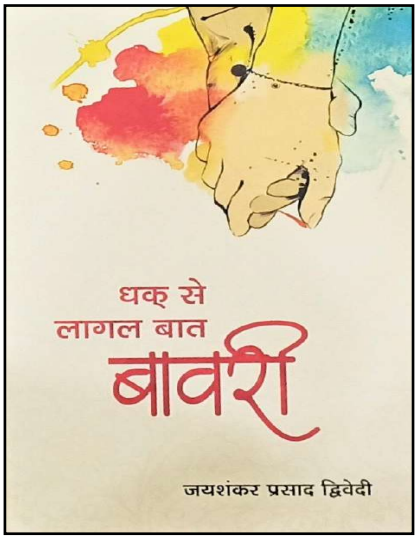

आदमी से डर रहल बा आदमी

अंकुश्री

आदमी से बाते–बात में
लड़ रहल बा आदमी
आदमी के मारे खातीर
मर रहल बा आदमी ।

आदमी से ढ़ेर बा दोस्ती
दोस्त ना बा आदमी
आदमी आज जनावर भइल
गोस्त भइल आदमी ।

आदमी के खाये खातीर
चर रहल बा आदमी
आदमी के भगदड़ में रोज
बढ़ रहल बा आदमी ।

आदमी निश्तेज अब हो गइल
जड़ भइल बा आदमी
आदमी क मारा–मारी से
तड़ रहल बा आदमी ।

आदमीयत बा खतम भ गइल
बेगैरत भइल आदमी
आदमी के जान के दुश्मन
हैरत भइल आदमी ।

आदमी बने के उपाय ना
कर रहल बा आदमी
आदमी के देख–देख के
डर रहल बा आदमी ।

आदमी के छोट करेला
बड़ भइल बा आदमी
आदमी के दाव–पेंच में
पड़ रहल बा आदमी ।

आदमी के बिगड़ल सोच से
सड़ रहल बा आदमी
आदमी बा जवना से
तड़ रहल बा आदमी

❑❑

❍ 8, प्रेस कॉलोनी,
सिदरौल,
नामकुम, रांची (झारखण्ड)

जयशंकर प्रसाद
द्विवेदी

खेतिहर

माघ–पूस के रतियन में
खेते–खेते मेहनतकस बा।

खेतिहर अजुवो ले बेबस बा॥

अजुवो अनाज बोवे से पहिले
आसमान के ताकेला
खाद, बीज, पानी के खातिर
हाट नहर के झाँकेला
रोपनी–सोहनी लवनी–कटनी
बोवनी के का बात करीं
जामल पौध अगोरे खातिर
रात–दिन बस भागेला
उपराजे के अन्न बादहूँ

एम एस पी के डस बा॥

औना–पौना दाम मिलेला
ओकरा कुल्हि मेहनत के
साह–आढ़ती नफा उठावस
तिनकर अजहद गुरबत के
अगहन–चइत के सपना ओकर
जाने कहाँ बिला जाला
फटेहाल बस फटेहाल
हर बेर जहाँ में रहि जाला
बेर–बेर चिचिअइला पर

संसद के झूठ बहस बा॥

आपन दरद बटोरले जब
कृषक सड़क पर आवेला
दिल्ली वाली दुनियाँ के
इचिको ना ऊ भावेला
कबों मोकदमा, कबों पुलिस से
सरकारो धमकावेला
जब चुनाव के दिन नियराला
उनुके गीत सुनावेला
झूठ–फरेबी के दलदल में

डूबल नेतन के नस बा॥

कब ले रोई, कहाँ ले गाई
कब ओकर किस्मत फरिआई
जब ले ओकर पेट जरत हौ
अन्नदाता का कहल सोहाई ?
कब ले ओकर मास बेंच के
ओही के मुअवावल जाई
हेरत बानी एकर उत्तर
झूठिया आस धरावल जाई
जागीं जागीं ए सरकार

एह दुख पर रउरे बस बा॥

❑❑

❍ गाजियाबाद, उ0 प्र0

हदस

दिनेश पाण्डेय

कुत्ता लागल जोर से, अचके सूतलि रात।
सन्न साँस दियरी अथिर, सिहिकल–सिहिकल पात। 1

कइसन हऽ खटका ननू, नीके बेंड़ किंवाँड़।
कुतवा होखी आपने, होखल जाता चाँड़। 2

फाटल का पहिया कहीं, चाहे तड़कल मेह।
सूखल लब भरकत गला, रह–रह दलके देह। 3

हँकड़लि काहे ए ननू, खूँटा बान्हल गाय।
लागत बड़ुवे लेरुआ, बहकल छान तुराय। 4

चुरुकत बा नवका बरध, साइद बिगरल लाद।
एकरो बस एही बखत, धइ लिहलसि उदमाद। 5

बब्बी का निसबद बिया, सटल मतारी पास।
भेंवल कइसे पाँयचा, काहे हिया हतास। 6

एगो–ना–एगो गिरत, रोजे–रोज लहास।
सबकुछ चउपट रामजी, गजबे बहल बतास। 7

अदिमी तऽ सहता भइल, महँगी बकरी भेंड़।
नवकी पीढ़ी उग रहल, बाँस कोंप में रेंड़। 8

पुरुखा जहवाँ जे रहन, हेंठा भा असराफ।
बाकी कुछ अइसन रहे, जूरल निहछल साफ। 9

दूध–अगन का हेत से, जोरल एके डोर।
चलत रहन जन लोक मग, कुनबा संघ बटोर। 10

एके नीयत भाव मन, उन्नत उहे समाज।
जहवाँ घिन फुटमत अनख, पसरे दुसह अराज। 11

मउगन के बहकाव में जाहिल जटिल समाज।
पेनी बड़ुवे खरकटल, तबहूँ अतिना नाज। 12

कहाँ जान बा देहि में, बाँचल खाली खूँख।
ठठरी का कान्हें कवन, टँगलसि भरल बनूख। 13

मारकाट से का कबो, सुलुझल कवनो बात?
बनचर जुग में लौटना, अंतहीन प्रतिघात। 14

बघऊ रहन मुहान पऽ, मेख निचानी धार।
फिन कइसे गहँडोर के, पानी कइलन खार। 15

'नीचे गति जलधार के', रखले साफ निदान।
गलथेथी के जुर्म में तबहूँ गइलसि जान। 16

अबर सहइया के रही, जब बेकहल बिचार।
कवने मुँह से बाघ से, छेर करी प्रतिकार। 17

हिंसा के बेहवार के, मानल सहजाचार।
अन्यायी के हाथ में बिख बूझल तरुआर। 18

एकसर सभकर हित हवें, चिंतन के आधार।
जनबिरुद्ध हिंसा भरल, तजन जोग कुबिचार। 19

उपदेशक दंभी छली, शासक चोर लबार।
मूँड़ी झाँटत मूढ़जन, खइले जात सियार। 20

होखल गलबल गाँव में, सगरे परल जगार।
ओसहिंएँ आवाज फिन, परल कहाँ पिपिकार। 21

लाठी में गुन ना रहल, अब लोहा अनिवार।
हिम्मत करि लोहा लिहल, नाथल ऊ सँवसार। 22

दाबी दे दऽ हाथ में, जाईं आईं देख।
होनी तऽ होई उहे, जइसन बिधि के लेख। 23

लउकल कबिता काल के, जिनिगी कइल मथेल।
जाँगर जबर जवान के, बुढ़वा गइल घपेल।24

❑❑

पटना,बिहार

ई गीत देखऽ

सोनी सुगंधा

केहू कुछुओ कहेला ना माने कहना
सखी नान्हे क बिगरल हमार साजना..।

दिन बड़ेरी गइल नींद नईखे टुटत
आंखी लासा भईल बाटे नइखे खुलत
थाकि गइलीं जगा के , हिले डोले ना
सखी नान्हे क बिगरल...

काम धंधा से कबहू न मतलब रहल
नीक लागेला बस दुअरा दुअरा घुमल
चाही खाए का बेरिया चटक तियना
सखी नान्हे क बिगरल हमार.....

धाई अंगना करीं धा बहरवा करीं
हम अकेले भलाअऊरी केतना मरीं
का करीं, ना करीं त का खाइ चेंगना
सखी नान्हें क बिगरल ....

❑❑

❍ जमशेदपुर,झारखंड

वीणा पाण्डेय 'भारती'

जन-गण मन दोहराइले

खुलल हवा में साँस लिहीले
धन-धन भाग जोगाइले
गरब से सीना चौड़ा बाटे
जन गण मन दोहराईले

जहाँ कही से हम गुजरीले
एक ही बात सिखाइले
बनल रहे भाईचारा ई,
सभहीं के समझाइले

माटी के माई जानीले
श्रम के अर्घ्य चढाइले
हम किसान मेहनत से अपना,
सभकर भूख मिटाइले

सीमा पर जे डटल सिपाही
उनकर खैर मनाइले
जय हिंद जय भारत बोलि के,
हिम्मत रोज बढ़ाइले

संस्कार के ओढ़न पहीरन
पहिरी आ पहिराइले
कुर्बानी के राग सुना के,
देश पर जान लुटाइले।

❑❑

❍ जमशेदपुर,झारखंड

गीत

राकेश कुमार पाण्डेय

यार करीला जान निछावर आजादी पर हम।
वन्देमातरम वन्देमातरम वन्देमातरम,

लड़िके लेहलीं आजादी ई,अंगरेजन के भगउलीं।
ठोंकिके छाती गोली खइलीं,आपन लहू बहउलीं।
आंखि खोलि के दुनिया देखलस,भारत क दम खम।
वन्देमातरम वन्देमातरम वन्देमातरम,

साल पचहत्तर अमृत उत्सव,आगे बढ़ते रहलीं।
इरखा में जरलें दुश्मनवां,चान छूइ हमअइलीं।
बापू बोस भगत क बगिया चमकेला चम चम।
वन्देमातरम वन्देमातरम वन्देमातरम,

देशवा के माटी में ताकत,उपजे हीरा मोती।
सबसे आगे रहें भारती,ज्ञान देखावें जोती।
लहरे तिरंगाअसमनवें में करा सलामी थम।
वन्देमातरम वन्देमातरम वन्देमातरम,

❍ **हुरमुजपुर, सादात गाजीपुर**

रामपति रसिया

भइया मलहवा रे

भइया मलहवा रे,
कवने घटिया लागी नइया मोर।।

नदिया अगम लागे,
सघन सेवार आगे,
भइया मलहवा रे,
कतहीं ना लउकत बाटे छोर।
भइया मलहवा रे,
कवने घटिया लागी नइया मोर।।

नाही गइनी पुरुब पछिम
देखनी ना उतर–दखिन
भइया मलहवा रे,
असरा लागल बाटे तोर।
भइया मलहवा रे,
कवने घटिया लागी नइया मोर।।

नदिया फुलाइल बिआ
देखि–देखि काँपे हिया
भइया मलहवा रे,
घेरले अन्हरिया घनघोर।
भइया मलहवा रे,
कवने घटिया लागी नइया मोर।।

रामपति रसिया सोई
दिहनी समइया खोई
भइया मलहवा रे,
भइल चाहत बाटे भोर।
भइया मलहवा रे,
कवने घटिया लागी नइया मोर।।

❑❑

❍ कुसीनगर, उ0 प्र0

जगदीश खेतान

गज़ल

हम मनई निपट गंवार हईं।
चालीस माडल के कार हईं।

बैरी हमसे थर–थर कापें
पर यारन खातिर यार हईं।

तलाक के बात कबो न करीं
हम सात जनम के यार हईं।

करजा मांगे जो केहू आवे
कही दीह की हम बीमार हईं।
विज्ञापन बिना चलेला ई
हम जनता के अखबार हईं।

आतंकी थर–थर कांपेलं
हम राणा के तलवार हईं।

बेकारी भत्ता दिलवा दीं
देखलादीं हम बेकार हईं।

मक्कारी हमसे का करब
'खेतान' से बड़ मक्कार हईं।

❑❑

❍ कुसीनगर, उ0 प्र0

बनचरी : एक नजर

मीनाधर पाठक

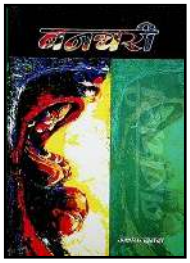

380 पेज के उपन्यास 'बनचरी' में हिडिमा के सगरो जिनगी की साथे महाभारत कथा समेटल गइल बा। हिडिमा के पूरा जीवन सीसा तरे साफ लउकता। लाक्षागृह से जान बचा के भगला के बाद नदी पार क के पाण्डव एगो गहन वन प्रदेश में पहुँचलें, भाई हिडिम की कहला पर हिडिमा ए लोग के मारे अयिली बाकिर भीम पर मोहित हो गइली। फिर का! हिडिम के बद्ध भइल, आ भीम हिडिमा के प्रेम–विवाह, बाकिर जल्दिए बिछोह हो गइल। बिआह से पहिलहीं कुंती हिडिमा से वचन ले लिहले रहली कि तूँ भीम से बिआहे के बाद कवनों अधिकार ना मंगबू। ना त अपनी खातिर, ना अपनी संतान खातिर। हिडिमा मानियो गइल रहली।

कुछ दिन भीम की साथे सुख पूर्वक जीवन बितवला के बाद पुत्र घटोत्कच के जनम भइल आ भीम अपने भाई–महतारी की साथे आगे बढ़ि गइलें। हिडिमा बिरह में बेकल भइली बाकिर जल्दिए अपना के संभार लिहली आ घटोत्कच के पालन पोषण आ आपन राज–काज देखे लगली बाकिर कुछ भेदिया लोग के माध्यम से भीम के पल–पल के खबर लेत रहली।

घटनाक्रम आगे बढ़ल आ पिता की ओर से युवा घटोत्कच महाभारत युद्ध में पूरी तइयारी के साथ कूद पड़लन। परिणाम का भइल, ई सभे जानता बाकिर हिडिमा के जीवन में आगे का भइल? ई जाने खातिर उपन्यास पढ़े के पड़ी।

उपन्यास में प्रकृति चित्रण एतना सुन्दर भइल बा कि सब दृश्य आँखि के आगे लउके लगता। प्रेम का ह ? आजु ले ठीक–ठीक के जानि पावल! आ जे जान लिहल ऊ का जाने मुक्त भइल कि बिला गइल। के जाने! ई कुल जाने बूझे खातिर सबके आपन–आपन दृष्टिकोण हो सकेला। बाकिर प्रेम में जे होला ऊ अपना के ढेर बिलवावेला। पूरा उपन्यास पढ़ला के बाद मन में कचोट उठता कि कुंती स्त्री हो के भी जीवन में कबो हिडिमा के मन ना परली, भीम कबो पीछे मुड़ के उनकी ओर ना देखलन, बाकिर हिडिमा प्रेम में आपन पुत्र, राज आ जिनगी, सब गंवा दिहली।

हिडिमा के प्रेम, समर्पण आ मुक्ति खातिर छटपटाहट के गाथा ह ई उपन्यास । पढ़ववला खातिर साहित्यांगन के आभार आ उपन्यास के रचनाकार आदरणीय अशोक द्विवेदी जी के सादर बधाई बा। जे पढ़ल चाहे, एहिजा से डाउनलोड क के पढ़ि सकेला।

❑❑

❍ उ0 प्र0

'काव्य कौस्तुभ' के मानद उपाधि

हिंदुस्तानी अकादमी के भिखारी ठाकुर सम्मान से सम्मानित भोजपुरी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के 'काव्य कौस्तुभ' के मानद उपाधि से नवाजल गइल। साहित्य मंडल नाथद्वारा राजस्थान में आयोजित भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति एवं राष्ट्रीय बाल साहित्य समारोह (6 – 7 जनवरी 2023) के उहाँ के एह उपाधि से सम्मानित कइल गइल । बतावत चलीं कि जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के अब तक ले 5 गो पुस्तक प्रकाशित हो चुकल बाडी आ उहाँ के 3 गो पुस्तकन के सह सम्पादन कर चुकल बाड़ें। भोजपुरी साहित्य सरिता पत्रिका का पछिला 6 बरीस से सम्पादन आ प्रकाशन कर रहल बानी।

सन 1937 में स्थापित एह संस्था द्वारा पहिल बेर भोजपुरी के 4 गो (केशव मोहन पाण्डेय, जयशंकर प्रसाद द्विवेदी, कनक किशोर आ डॉ हरेराम त्रिपाठी 'चेतन') साहित्यकारन के समानित कइल गइल। साहित्य मंडल के मंच से पहिल बार भोजपुरी भाषा में संबोधन जयशंकर प्रसाद द्विवेदी के नाम दर्ज भइल, एकर पुष्टि संस्था के प्रधानमंत्री श्याम प्रसाद देवपुरा खुदे कइलें।

❑❑

तीन कविता

डॉ राजीव उपाध्याय

1.
आ जाला जब कान्हे
बहुत रूखर लागत बा दिन आजकाल्ह
कि जरा दी देंहि आँच सूरुज के!
बाकिर बावे उमेद कि अँखुआई बियड़
कि लगा के लेव छिंटले बा धान सगरी!

पानियो तलफता पानी खाती जब
ऊ बोझा लादि के दुपहरी में
सूरुज के देखावेला साँझ के रस्ता
कि घरे बरे ओकरा संझवत के दियरी!

ऊ मुनाहरे उठ जालि
निपटावे खाती काम सगरी
कि मालिको के मुँह ताकेला सकेरे
ओकरी तावा के चाकरी!

बहुत काम बा अइसन जेवन केहू ना करे
बाकिर आ जाला जब कान्हे, हो जाला सगरी।

2.
बड़ा उह–जाह बा
बड़ा उह–जाह बा
का होई बुझात नइखे!

लगूसी से खींच
सूरूज के सिराहना रखि लीं
कि चहुँपा दी पाती
बात लिख के सगरी
कि आँख बन कऽ हाथ जोड़
गोहरा लीं उनका से।
बड़ा उह–जाह बा
का होई बुझात नइखे!

भकजोन्ही नियर उमीद
कबो अंजोर बन जाता
तऽ अगिला छन
भादो के अन्हरिया घेरले
कबो कुआर के घाम
नियर देंह जरावे
कबो फगुनहटा नियर
मन भरमावे।
बड़ा उह–जाह बा
का होई बुझात नइखे!

हम का करीं?
देखि के राह ताकीं
कि जोर से दउड़ लगा दीं।
का रचले बाड़ऽ
कुछ बुझात नइखे!

3

पिता
बहुत साल पहिले
पिता बनि
पिताजी के जूता पहिर
लागल
उनका नियर हो गइल बानी!

बाकिर
जब बननी पिता
पता चलल
बात कुछ अउर बा।

कि बाप बनल घटना नाही
रोज–रोज के साँस हऽ बलुक।
अउरी ओह साँस में अझूराइल
प्रश्न सगरी
जेवन पूछे चाहत रहनी
पिताजी से कबो
सझूरा गइल
कि नजर परल जूता पऽ उनकी
जेवन घिस के
कुछ बड़ अउर हो गइल रहे!

❑❑

❍ बलिया,उ0 प्र0

बिम्मी कुंवर

धिया हो धिया ना कम खइह, ना गम खइह

तनि हाथ जातिए के काम करे बा , बूझनी! हाथ अचवत मास्टर साहेब मस्टराइन से बोललन।

परिवार संगे गांव में ही उ रहत रहुअन आ अभी ले त पांच कोस साइकिल चला के इसकूल जात रहुअन। बाकिर जब दूनो बाल बच्चा जब सयान हो गइल लोग त शहर में किराया प डेरा लेके दूनो के नाम लिखवा देलन आ साइकिल से अब आठ नौ कोस दूर इसकूल जात रहुअन । इसकूल से लवट के फेर एक दू घंटा आराम कइला के बाद शहर में घरे–घरे जा के टीसन पढ़ावे लगलन।

गांवे से एक आना मिले के ना रहे, आ गउंओ के माली हालत बरियार ना रहे। सहर में ठीक ठाक पइसा मिल जात रहे कि पर परिवार के गुजारा नीमन से हो जाए, बाकिर जेकरा नस मे कंजूसी अमाइल रही उ कतनो पइसा हो जाइ आपन आदत ना छोड़ी। एक पाव हरिअर तरकारी में आलू फेट के बन जात रहे। एक बेर तरकारी बने त नास्ता आ खाना दूनो में काम चलावल जात रहें।

मस्टराइन के लूगा–झूला जवन उनकरा नइहर से मिलत रहे उ उहे पेन्हस। आस पड़ोस मे घूमे फिरे के पाबंदी रहे , इहे नियम बेटिओ प लागू रहे इसकूल से अइला के बाद माई बेटी घर में बन हो जात रहली जा। काहें से कि बहरा भीतरी घूमिहे जा त नया–नया सवख सिंगार करे के मन हो जाई। बेटी के बी.ए. पास करते उनकर बिआह ओह पार के ठीके ठाक परिवार में भ गइल। बेटी के ससुरा गइला के बाद मस्टराइन अकेला हो गइल रहली। फोन से कबो–कबो बेटी से बतिआ लेस। बेटी के बात बिचार से उनकरा के खटका भइल कि बेटी ससुरा में बुला खुस नइखी। उ इ बात अपना मास्टर साहब से कहली त उ डांट के बरिज देलन कि अभी नया समाज में गइल बाड़ी बेटी तनि सीखे बूझे द , बेर बेर फोन मत कइल करा। माई सवांग के डरे बेटी के फोन कइल बन क देली बाकिर उनकर जीऊं धीआ खातिर डेराइल रहे। उनकरा बुझाए कि बातचीत में बुचिया कवनो बात लुकवा वे के कोसिस कर रहल बाड़ी।

बाकिर केकरा से कहस आपन मन के बाथा। असही करत छ महीना बीत गइल आ एगो छूतिहर भोर के खबर आइल कि भरौली थाना में बेटी के जरल लास राखल बा, इ खबर सुनते मस्टराइन के आंख के आगे अन्हेरिया छा गइल। खाड़े– खाड़ उ धड़ाक देना भूइया गिर गइली। मकान मालिक के पतोहू उनकरा के ध पकड़ के बिछवना प सूतवली ।

मास्टर साहेब आ उनकर बेटा भागत परात भरौली थाना प पहुंचल लोग । बेटी के धुआईल– पथराइल आंख एकटके छत के तिकवत रहें, दूनो हाथ आधा जर गइल रहे आ सीना के नीचे के सगरी देह जर के अइठल लुआठी भ गइल रहे । बेटी के अइसन रूप देख के कठकरेज मास्टर के भी सीना फफक पड़ल। ससुराल वाला लोग रोअत पीटत रहे कि चूल्हा भीरी खाए बनावत रहली बस लूंगा में लुत्ती ध लिहलस ह...देह प पानी बीगे–बीगे में त आधा देह जर के कोयला हो गइल ह।

सास ननद आ गोतनी अतना भोकार फाड़ के रोवत रहें लोग कि मास्टर साहेब के बेटा उ लोग के ढाढस बन्हावे लगलन। थाना में पूछताछ अभी चलते रहें कि मस्टराइन भी मकान मालिक के बेटा संगे ओजुग पहुंच गइली...आवते धधा के बेटी के देही प गिर के छपिटाए लगली आ रो रो के कहे लगली '' अरे बुचिया हो बुचिया, इ का कइ ले लू....कवन दुखवा माई से लुकवा के अपना लाद में जतले चल गइलू रे बुचिया!

बुचिया के गोतनी मस्टराइन के घींच–घांच के फरका कइली। पुलिस रिपोर्ट में इहें लिखाइल कि खाना बनावत घरी जर गइली ह। जब लास जरावे खातिर जाए लागल त पीछे से मस्टराइन के दहाड़त आवाज से सभकर गोड़ ओजुगे थथम गइल '' एक मिनट , रूकी सभे...''
बाघिन के चाल से उ दउरत भागत अपना बेटी के लास भीरी पहुंच के बेटी के बाया सीना प हाथ ध के कुछ टोवें लगली, आ फेर बेलाउज में हाथ डाल के पिन से नाथल चिठ्ठी निकाल लिहली...चिठ्ठी दरोगा जी के देखावत उ चिघांड़त बोलली
'' बुचिया जरल नइखे दरोगा जी ओकरा के जरावल गइल बा''

मस्टराइन के हाथ में चिठ्ठी देख के बुचिया के ससुरा वाला लोगन के चेहरा के हवाई उड़ गइल रहे उ लोग ओजुग नौ दू एगारह होखे के कोसिस कइले, बाकिर तुरंते दरोगा जी के इशारा भइल आ मय जना के दबोच लिहल गइल...दरोगा जी चिठ्ठी पढ़े लगले आ बुचिया के माई–बाप–भाई के संगे–संगे मय थाना आ डगरिया के लोग–बाग, फूट–फूट के रोवे लागल लोग

''दुख दे–दे भगावे पापी
बाकिर उ घिघिआत
बहुत रहली,
मेहंदी रचल हाथ के जरावे लोभी
बाकिर उ लजात बहुत रहली,
माई फफक–फफक रोवत बाड़ी
धिआ के जरल–बिधुनल देह प...
का जाने काहे जाई से सांच बतिया कहे में
उ सकुचात बहुत रहली,

❑❑

चेन्नई

मनोज भावुक

भोजपुरी लोकगीतन के सहेज के मॉरिशस बना देले बा यूनेस्को के धरोहर

जहाँ हमनी के भोजपुरी गीत– संगीत में बढ़त अश्लीलता अउरी घटत गुणवत्ता में अझुराइल बानी जा, उहाँ मॉरीशस भोजपुरी गीत संगीत के माथे के मुकुट बना के यूनेस्को ले पहुँचा देले बा. मॉरीशस के एगो संस्था के लोकगीतन के अकूत धरोहर सहेजे, सँवारे खातिर यूनेस्को विश्व पटल पर अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर में शामिल के लेहले बा अउरी एह घटना के भी बितले 5 साल भइल.ओह संस्था के नाम ह 'गीत–गवाई'.

भोजपुरी भारत के भाषा ह आ हमनी के भारते में भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता दिआवे खातिर अभियो लड़ाई लड़ रहल बानी जा.ओने इहाँ से भोजपुरी भाषी गिरमिटियन के साथे गइल भोजपुरी आज एतना बड़ ओहदा पर पहुँच गइल बा कि ओकरा के यूनेस्को जइसन संस्था पहचान देहले बा. मॉरीशस भाषा के लेके केतना संवेदनशील बा कि हेती चुकी देश में जहां कईगो भाषा बोलल जाला जइसे क्रिओल, फ्रेंच, अंग्रेजी.उहाँ भोजपुरी खातिर एतना प्रेम, एतना सम्मान.

आज ओही 'गीत गवाई' संस्था के बारे में बात होई. एह संस्था के मुखिया रीता धनदेवी जी के बचपने से घर–परिवार में गावे जाये वाला संस्कार गीत में बड़ा दिलचस्पी रहे.धीरे–धीरे ई दिलचस्पी उनके शौक बन गइल अउरी उ लोकगीतन के बारे में खोजे लगली, पढ़े लगली अउरी जाने लगली. बाद में ई जुनून बनल आ इनका साथे अउर भी भोजपुरी संस्कृति प्रेमी महिला लोग जउरीआइल आ बन गइल गीत गवाई संस्था.एह संस्था के नींव साल 2004 में अचके में पड़ल.भइल का कि रीता धनदेवी के सहेली उमा बसगीत उनसे मिले अइली अउरी बाते–बाते लोक गीतन के चर्चा होखे लागल.उनके सखी रीता जी से सोहर, झूमर, बिदाई गीत आदि के बारे में पूछत गइली आ ई अपना जानकारी के हिसाब से उनके बतावत गइली.एही जा आइडिया आइल कि केतना भोजपुरी भाषी होई लोग जेकरा लोकगीतन के एतना जानकारी होई? काहें सभके आपन जड़ छोड़ले त कई पीढ़ी हो गइल.काहें ना एह में रुचि रखे वाला महिला के जोड़ल जाय अउरी एगो टोली बनावल जाय आ गीत गवाय काम्पिटिशन करावल जाय.फेर 4–5 गो गाँव में जाके उहाँ के गीथारिन (भोजपुरिया पृष्ठभूमि वाली महिला) लोग के जोड़ल गइल.धीरे–धीरे 15 गो महिला जुटली आ बाद में ई संख्या 25 हो गइल.ई टोली एगो बियाह में शामिल भइल.उहाँ स्टेज पर जवन एह लोग के रंग जमल आ उहाँ के श्रोता लोग पर जादू चलल.उहे बाद में एह संस्था के आधार बनल.ई एक तरह से गीत गवाई संस्था के स्वीकार्यता रहे.

बाकिर कुछ साल के अंतराल के बाद श्रोता के एतना डिमांड रहे कि 2010 में रीता जी गीत गवाई के दुसरका संस्करण लेके अइली अउरी एह बेरी उ पूरा देश के महिला के शामिल कइली. लोग एह आयोजन के खूब सराहल.फेर अगिला साल 2011 के अक्टूबर में लोक परंपरा गीत काम्पिटिशन के आयोजन भइल.एह प्रोग्राम में तब के मॉरीशस के कला एवं संस्कृति मंत्री आ स्वास्थ्य मंत्री आइल रहलें .उनका साथे एगौ अउरी व्यक्तित्व के उहाँ उपस्थिति रहे जिनका चलते गीत गवाई के एगो नया उड़ान मिलल.भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन के अध्यक्ष डॉ.सरिता बुद्धू उहाँ रहली अउरी एह संस्था से एतना प्रभावित भइली कि एहसे जुड़ गइली. डॉ सरिता के चलते ई संस्था के कलाकार बड़–बड़ मंच पर प्रस्तुति देबे लगलें अउरी एह तरे गीत गवाई के लोकप्रियता बढ़े लागल.फेर 2013 में पेटिट रैफरे गाँव में गीत गवाई के पहिला स्कूल खुलल, भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन गीत गवाई स्कूल ऑफ पेटिट रैफरे.आ गीत गवाई के लोकप्रियता देखीं कि साते आठ साल में 50 गो स्कूल हो गइल बा देश भर में आ एह संस्था के लक्ष्य बा कि पूरा मॉरीशस में स्कूलन के संख्या और बढ़ावल जाव.कबो कुछ महिला के साथे शुरू भइल गीत गवाई के परिवार आज सैकड़न में पहुँच गइल बा.

'गीत गवाई' संस्था लोक गीत, संस्कार गीत अउरी भोजपुरी संस्कृति के परचम खाली मॉरीशस में ना बल्कि देश–विदेश में फहरा रहल बा. 2016 के नवंबर में मॉरीशस सरकार के सहयोग से यूनेस्को गीत गवाई संस्था के मानवता के अमूर्त धरोहर में शामिल कइलस. ई टीम 2017 में मिस्र के राजधानी कैरो में जाके आपन प्रस्तुति देहलस आ एह टीम के अइसन धूम मचल कि 17 गो प्रोग्राम भइल.ई टीम 2018 में भारत भी आइल. एह टीम के गायन के हेड रीता धनदेवी बाड़ी आ भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन के अध्यक्ष सरिता बुद्धू एकर निर्देशन करेली

गीत गवाई लोकगीत के कई गो विधा में आपन प्रस्तुति देला बाकिर संस्कार गीत के कार्यक्रम ढेर होला जइसे लग्न गीत, सुमिरन, सांझा–पराती, महादेव गीत, सुहाग गीत, झूमर, सोहर, बिदाई गीत आदि गावेला लोग.एह संस्था के वाद्य यंत्र तनी हटके बा.एकदम देसी वाद्य यंत्र के प्रयोग होला, जइसे पीढ़ा, छीपुलि, थरिया, लोटा बजेला, ओकरा के डंडा से बजावल जाला.जब लोक वाला रॉ आवाज अउरी ई बाजा के धुन मिलेला त अद्भुत संगीत पैदा होला.अगर रउआ कबो सुने के मौका मिले त सुनब, हमार गारंटी बा कि राउर पैर थिरके से नइखे रुक सकत.

बकौल रीता धनदेवी, "हम जब 3–4 साल के रहनी तबे से गीत गवाय हमरा कान में गूँजत रहल बा.जब नानी के साथे तुलसी पूजा करीं त उ गीत गावस.आस पड़ोस में बियाह भा कवनो जग परोजन होखे त उहाँ भी सखियन के साथे जाईं अउरी गीत सुनीं.बचपने से सुनले त खूब रहनी बाकिर ई ना समझ आवे कि ओ गीतन में अइसन का खास बा कि हमरा चित्त में बस गइल बा, उ धुन, उ आवाज हम ना भुला पाईं.तब हम ई गीत गवाय के खोजल शुरू कइनी कि ई कहाँ से आइल, कइसे आइल आ ई का ह? एही खोज में गीत गवाई के नींव र खाइल." उ आगे बतावली कि गीत गवाई के लोकप्रियता बढ़त जा रहल बा.हमनी के 50 गो स्कूल खोल लेहले बानी जा अउरी खोले के ल क्ष्य बा.गीत गवाय अइसन एगो खजाना बा कि एकरा के जेतने खोनब, ओतने एमें से बहुमूल्य रत्न निकली, ओतने एकर मिठास पता लागी.ई मिठासे ह कि यूनेस्को एकरा के धरोहर समझलस आ मान्यता देलस.

❑❑

❍ मनोज भावुक भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के संपादक, अचीवर्स जंक्शन के निदेशक, टीवी पत्रकार आ सुप्रसिद्ध कवि हईं।)

केशव मोहन पाण्डेय
साहित्य संपादक

जनम के उछाह में सोहर के सरसता

लोक साहित्य कवनो संस्कृति से ढोवे वाला सबसे सहज माध्यम होला। बिना कवनो रोक–टोक आ बिना कवनो बान्हा के अलिखित रूप में कवनों समाज के जन–जीवन के सुन्नर आ सहज झाँकी लोकगीतन के माध्यम से प्रस्तुत होला। साँच बा कि लोकेगीत से लोक जीवन के साँस कायम रहेला। ई लोकगीत में अपना–अपना जवार के आपन–आपन पहिचान आ विशेषता के साथे जन–मानस में विद्यमान पावल जाता। एह लोकगीतन के चमत्कार त ईऽ होला कि खाली शब्दन के हेर–फेर से स्वरुप बदल जाला बाकिर भाव के ताकत ऊहे रहेला। लोकगीतन के गावल होखे चाहें सुनल, एहसे लोक जीवन के समृद्ध आ आनन्ददायक जीवन के सिरजना होखे लागेला। लोक–जीवन में लोकगीतन के माध्यम से परिवार, समाज, देश के सुख–दुख, जग–परोजन, दशा–दुर्दशा, पीड़ा–उछाह, जीअन–मरन, मेल–मिलाप, रिश्ता–नाता जइसन सगरो व्यक्तिगत आ व्यावहारिक पक्षन के साथे जिनगी के यात्रा में साथ निभावत रहेले। लोकगीतन से जीवन जीए के ढंगो आवेला, सीखो मिलेला आ आदर्शो स्थापित होला।

जगत के शाश्वतता आ जीवन्तता जिनगीए के कारण बा। धरती पर जीव बाड़े त जिनगी में सगरो रंग बा। सनातन धर्म के मानी तऽ एह मानुष जीवन में सोलह गो संस्कारन के बात कहल जाला। हमनी के लोग जीवनो में ओह संस्कारन के बड़ा आदर बा। लोक–जीवन के सगरो आचार–विचार ओह संस्कारन से प्रेरित आ नियंत्रित भइला के साथहीं सजलो–सँवरल लागेला। ओह संस्कारन के पावन बेला पर मन एगो दोसरे उल्लास आ आनन्द से भर जाला। ओह उछाहन के व्यक्त करे में लोक–जीवन से सबसे ताकतवर आ सहेजे वाला गृहिणी लोग के आस्था, निष्ठा आ विश्वास सबसे अधिका रहेला। लोक–जीवन में संस्कारन से गुजरत हमरा–रउरा आ सबका घर के ईआ, नानी, माई, फुआ, बहीन, बेटी, सभे सबसे पहिले जुमेला लोग आ अपना कोकिल–कंठ से गीतन के वीणा बजा के स्वर के रस के बौछार से मन के आह्लाद व्यक्त करेला लोग। ऊ लोग अपना गीतन से जीवन के संस्कारन के अउरी रंजक बना देला लोग। संस्कारन से समाज अपना रीति–नीति के अनुसार संस्कारित होत रहेला। ओह

अवसरन पर कुछ विशेष विधि–विधान, पूजा–पाठ कइल जाला, कुछ लोकाचार निभावल जाला। ई लोकाचार, ईऽ संस्कार पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित होत रहेला। ओह संस्कारन के अवसर पर गावल–बजावल, नाचल, स्वाँग भरल, हँसी–मजाक, छेड़छाड़ कइल जिनगी में अउरी रंग भर देला।

सधवा नारी के गोद भरल रहे, ईहे भारतीय सोच के चरम परिणति होला। ओह गोद में बेटा खेलत रहे, एकर इच्छा तऽ आउओ व्याप्त बा। सगरो समाज में अधिकता में रहबो करेला। पुंसवन संस्कार के बाद जब घर में जन्म होला तऽ परिवार, जाति, बिरादरी, टोला, मोहल्ला में उमंग छा जाला। जनम के प्रसन्नता तब खाली बाप–महतारी के ना हो के सगरो परिवार के संगे सबके हो जाला। सामाजिक प्रसन्नता हो जाला। ओह अवसर पर जवन गीत आस–पड़ोस, घर परिवार के काकी–चाची, फुआ–दीदी गावे ला लोग, ओह के सोहर कहल जाला। सोहर के कतहूँ–कतहूँ मंगल भी कहल जाला। पुत्र के जनम लेहला पर बारह दिन, माने बरही ले ई गीत गावल जाला आ बालक के बरही के साथवे एकर समापन होला। सामान्य रूप से ओह सोहर के तीन गो रूप मिलेला – (1) देवता जगावन, (2) सोहर आ (3) खेलवना।

जब केहू के घरे बेटा के जनम होला तऽ दाई चाहे महरीन घर के बाहर निकल के फूलहा चाहे पितल के थरीया हँसुआ से बजावे लागेली। ओह थरिया के आवाज सगरो टोला–मोहल्ला में सबके कान में जा के एक बात के ऐलान करेला कि फलाने के घर में वंश के बढ़ोत्तरी हो गइल बा। कि ओकरा साथवे मानव–वंश के बढ़ोत्तरी हो गइल बा। ऊ थरिया बजावल सुन के आस–पड़ोस, घर परिवार के सगरो काकी–चाची, फुआ–दीदी जुम के देवता जगावे लागेली। ओह देवता जगावन के पित्तरो नेवतल कहल जाला। काकी–चाची, फुआ–दीदी अपना गीतन के माध्यम से अपना पितर माने पूर्वज लोग के नाम ले–ले के ई सूचना देला लोग कि दे खीं लोगीन, हमनी के अपना गीत से ई शुभ सूचना देत बानी जा कि रउरा सभे के आत्मा के शांति बदे तर्पण करे वाला रउरा कुल में धरती पर जनम ले लेहले बाड़े। हे देवता लोग, हे पित्तर लोग, रउरा सभे ओह जनमतुआ के आगमन पर आनंदित हो के आशीष दीं लोगीन। ईहे सूचना देत गीत के गुँज सुनाए लागेला –

आवहू गोतिया रे आवहु गोतिन आरे...ऽऽ
गाई के जगावहू
शिवमुनि बाला कि
जनमे ले नाती नू होऽ।

एगो दोसरा उदाहरण से सोहर के मंगल रूप के पता चल जाता। ऊ मंगल गीत बहुत हद ले देवता आ पित्तर लोग से सुनावत होला। देखीं ना, –

गावहू ए सखी गावहू
गाई के सुनावहू होऽ
आरे, सब सखी मिली गावहू
आज मंगल गीत नु होऽ।।

देवता जगवला के बाद पतरा में शुभ बेला देख के लगन निश्चित कइल जाला आ ओह निश्चित लगन पर सोहर गावल जाला। साँझे, राते, बिहाने चाहे दुपहरिया, कवनो बेरा मेहरारू कुल 'सुतिका–गृह' के दुआर पर बइठ के सोहर के अमरीत वर्षा से गाँव–जवार के साथे अपना संस्कारन के समृद्ध करे लागेला लोग। मेहरारू लोग सोहर गावे खातिर 'सूतक–गृह' के दुआर चाहें आस–पास के स्थान एह से चुनेना लोग कि गीतीया प्रसूता के साथवे नवजातो के कान में पड़े। एहके मानसिक मान्यता होला कि सोहर सुनला से जच्चा–बच्चा दूनो जने के स्वास्थ्य लाभ मिलेला। हमरा बुझाला कि भले स्वास्थ्य लाभ मिलत होखे चाहे ना, बाकी एही बहाने रोचक संगीत तऽ सुने के मिलबे करे ला। –

बाजन बाजे सत बाजन
नउबती बाजन होऽ
ऐ जी, राजा राम लीहले अवतार
अयोध्या के मालिक होऽ।

बरही माने लइका जनमला के बारह दिन पर के कार्यक्रम। ओह दिन ले रोजो, कवनो बेरा, जबे साँस मिले, मेहरारू लोग जुम के सोहर गावेला लोग। आजुओ तऽ पुत्र–प्राप्ति उत्सवन के प्रधान मानल जाला। ओह अवसर पर पँवरिया लोग के गावल आ नाचल तऽ होखबे करे ला, जुमल मेहरारूओ लोग नाचे–गावेला लोग। एह अवसर पर नाचे–गावे के प्रथा आदि से चलत आ रहल बा। अपना रामायण में महर्षि वाल्मीकि जी राम जी के जनम पर अप्सरा लोग आ गंधर्वन के नाचे–गावे के बात लिखले बानी। 'जगुः कल च गंधर्वाः ननृतुश्चाप्सरो गणाः।' अपना 'रघुवंशम्' महाकाव्य में आदिकवि कालिदास जी भी लिखले बाड़े कि राजा दिलीप के महल में 'अज' के जनम लेहला पर वेश्या लोग नाचत–गावत बा। 'सुखश्रवाः मंगलत्र्यनिस्वनाः प्रमोद नृत्यैः सह वारयोषिताम्'। ओही तरे बेटा जनमला पर अपनीहों गाँव–जवार में सुने के मिलेला। एगो फिल्म में प्रयोग भइल ई

पारंपरिक गीत देखीं –

जुग जुग जियसु ललनवा,
भवनवा के भाग जागल होऽ,
ललना, लाल होइहे, कुलवा के दीपक
मनवा में आस लागल होऽ।

ई देखे के मिलेला कि सोहर में अधिकतर राम–कृष्ण के जनम से संबंधित गीत होखेला। सोहर गीतन में वर्ण्य–विषय के विविधतो पावल जाला। कुछ सोहरन में महतारी ना बनला के टीस रहेला त कुछ में गर्भावस्था में कुछ विशेष खाए–पीए के अभिलाषा आ कुछ में पुत्र जनम के आह्लाद के साथही देवी–देवता के पूजा–पाठ के कथा–प्रसंग। ई सगरो सोहर के विविध रंग हऽ, जवना में बधाई सूचक सोहरे गावल जाला। 'सोहर' के उत्पत्ति जाहें जेऽ तरे भइल होखे, पुत्र के आगमन पर होखे वाला एह गीतन के छंदओ 'सोहरे' हऽ। सोहर गावे खातिर कवनो बाजा के जरुरत ना पड़ेला। एह खातिर ना ढोलक के थाप चाहीं, ना झाँझ के झोंझ रहेला। भोजपुरी के सोहर के बारे में विद्वान लोग के ई मत हऽ कि ऊ तुक आ नियम से परे होला। भाव व्यक्त करे खातिर बान्हा

कइसन? भोजपुरी के सोहर कवनो पहाड़ी नदी जइसन स्वछंद आ धारदार होला। हमरा माई के ई पसंदीदा सोहर रहे। देखीं ना –

माथे मुकुट कृत कुण्डल
ओढले पीताम्बर होऽ
माई होऽ,
बाँसुरी बजावत कृष्ण जनमे ले
मोरा कोखी आवेले होऽ।।

सोहर के गीतन में संभोग शृंगार के वर्णन के सथवे आनन्द आ उल्लासो के अद्भुत वर्णन मिलेला। ओह गीतन में सद्यः माई बने वाली औरत के मन के गुदगुदावे वाला शब्दन आ गीतन के अधिकता होला। अइसनके गीतन के 'खेलवना' के नाम दिहल जाला। एह सोहरन में पति–पत्नी के संबंध में कबो–कबो पड़े वाला खटास के साथे देवर–भाभी के पावन संबंध के उजागर कइल जाला। एह तरे के अनेक बिम्बन के सिरिजना कऽ के अनगिनत सोहर भोजपुरी में गावल जाला। हम अइसहूँ अपना माई से बेर–बेर सोहर गवा–गवा के ओहके रिकार्ड क के ऑडियो रखले बानी, जवन अब खराब हो ता आऽ इऽ लेख लिखत बेरा अंतर–मन से ईयाद आवता। माई के गावत सोहरन में कई गो 'खेलवनो' सुनले बानी। देखला पर मिलेला कि सोहर के विषय के विस्तार के तुलना में खेलवना में संक्षिप्तता रहेला। देखे के मिलेला कि एह खेलवना से नया उमीर के बहू–बेटी लोग के ज्ञान दिआला। खेलवना में लइका जनमला से घर में आइल खुशहाली, बधाई, नेग–चार आदि के सथवे ननद–भौजाई के हँसी–ठिठोली के मिश्रण रहेला। एगो उदाहरण देखीं –

बबुआ रुन मुन झुन मुन
अंगना सोहावन अइले नाऽ
अपना बाबा के खरचा करावन अइले ना नाऽ।
अपना दादी के चोरिका लुटावन अइले नाऽ।।

सोहर में गुदगुदी के एगो दोसरो चित्र देखीं। एहसे पता चल जाता कि लोक जीवन में प्रकृति के बिना कवनो जग–परोजन, कवनो उछाह–अमरख के कल्पना नइखें हो सकत। –

चकवा जे पुछेले हुनहुन
कब होइहें झुनझुन
कब होइहें होऽ।।

सोहर गीतन में पति–पत्नी के रति–क्रीड़ा, गर्भाधान, गर्भिणी के शारीरिक बनावट, दोहद, प्रसव–पीड़ा, महरीन चाहें धगडिन के बोलोवला से ले के पुत्र के जनमला ले के भी वर्णन होला। एकरा सथवे कई जगह ईहो वर्णन मिलेला कि प्रसव–पीड़ा के बेरा पत्नी अपना पति–परमेश्वर से दूर ना रहेके चाहे ले। राम–सीता के वर्णन पर आधारित ईऽ सोहर देखीं नाऽ –

राम चलेले रथ साजि के
केहू देखहूँ ना पावेला होऽ
अरे, सीता कहेली कर जोरि
हम रउरा साथे चलेब होऽ
ए साहेब,
अंतर–वेदना के ई बतिया
हम केकरा से कहेब होऽ।।

गर्भवती स्त्री जवन–जवन चीज के खाएके विशेष इच्छा व्यक्त करेले ओहके 'दोहद' कहल जाला। कालिदास जी स्पृहावती वस्तुः केषु मागधी में एकर वर्णन कइले बाड़े। अइसनका वर्णनन में ईहो मिलेला कि सुन्नर–बेटा के जनम देहला पर दोसरो औरत प्रसूता से ओहिसनके बेटा पावे के उपाय पूछ. ेले। राम जइसन बेटा के देख के सुमित्रा पूछेली। देखीं –

हँसी–हँसी पुछेली सुमित्रा रानी
सुनहू बहिना कोसिला नु होऽ
ए बहिना
कवन–कवन व्रत कइलू
रमइया पुत्र पवलू नु होऽ।।

सोहर के गीतन में छेड़छाड़ आ गुदुरावे वाला गीतन के अधिकता भइला के साथवे छोट–मोट कथो–कहानी के वर्णन मिलेला। एह तरे के अनेक सोहर गीतन से भोजपुरी भाषा अउरी समृद्ध होले आ सथवे भोजपुरी के लोक–साहित्य के अमर धरोहरनो में बढ़न्ती होला। बातचीत, कथा–कहानी परिवार के हर सदस्यन के सथवे पति–पत्नीयो के बीच देखे के मिलेला। देखीं ना –

पिया पीअर
पिया पीअर के हमरो साध
पीअरिया हम चाहिले होऽ।
धनि नइहर
धनि नइहर लोचना भेजवाव
पीअरिया तुहूँ पहिर नू होऽ।।

बेटा जनमला पर 'पँवरीया' नाचेला लोग। ई पँवरीया अधिकतर मुसलमान होला लोग, जे भगवान राम के कथा के गा–गाके नाचेला लोग। अब तऽ पँवरीया लोग के नाच–गाना भरे मेटाऽ ताऽ बाकी जब ऊ लोग ढोलक पर कुकुही (एक तरे के बाजा) के मधुर संगीत से आपन राग मिला–मिला के गीत जब गावेला लोग तऽ मन में उछाह भर जाला। अपना गाँव–देहातन में, जहाँ सोहर के गीत आ पँवरीया के नाचन के प्रथा, भले दूबरे हालत में सही, जीअऽता, ओहिजा के रम्यता देखते बनेला। हम लइकाई में अपनदा दुआर प पँवरीया लोग के

नाचल–गावल देखले बानी आ ऊऽ चित्र आजुओ आँख में बसल बाऽ। सोहर गीतन में पँवरीयो लोग के वर्णन मिलेला। एगो उदाहरण देखीं –

दुअरा पर नाचेला पँवरीया
तऽ अंगनवा कोतकवा नाचे होऽ,
आरे, ओबरी में नाचे ले ननदीया
तऽ होरीला कहि–कहि के होऽ।
आरे, दे दऽ भाभी अपने कंगनवा
ललन के बधइया लेबऽ होऽ।।

बधइया या नेग लेबे में फुआ सबसे आगे होली। फुआ, पँवरीया, महरीन, धंगडिन आदि लोगन के नेग मँगला के वर्णन सोहर गीतन में भरपूर मिलेला। नेग माँगे के बेरा तऽ हर जनमतुआ राम–कृष्ण आ हर माई कोसिला–यशोदा हो जाला लोग। एगो धंगडि़न के नेग माँगला के वर्णन देखीं –

मचिया ही बइठल कोसिला रानी,
बड़की चउधराइन होऽ,
ए रानी, हम लेबो सोने के हँसुआ
त रुपवा के खापड़ी होऽ।
पहिरी ओढि धगडिन ठार भइली,
चउतरा चढ़ी मनावेली होऽ
आरे बंस बाढ़ो रे, फलाना राम के घरवा
बरिसे दिन हम आइब होऽ।।

लोक–जीवन के विडंबना देखीं कि जहाँ बेटा के जनमला पर उत्सव मनावल जाला, ऊहवें बेटी के जनमला पर विषाद फइल जाला। सोहर में कई जगह एकर वर्णन मिलेला कि महतारी कहेली कि जे तरे पुरइन के पतई बेयार के काँपेला होही तरे बेटी के जनमला पर हमार करेजा काँपऽता। कहल जाला कि एही कारने बेटी के जनमला पर सोहर ना गावल जाला। कई जगह बेटी–जनम के पीड़ा व्यक्त भइल बा। रउरो देखीं ना –

जेठ बइसखवा के पुरइन
लहर–लहर करे एऽ,
आरे, ताहि कोखी धिअवा जनमली
त पुरुख बेपछ परले एऽ।
मइले ओढ़न, मइले डासन,
कोदो चउरा पंथ भइले एऽ,
आरे, रेंडवा के जरेला पसंगिया,
निनरियो नाहि आवेले एऽ।

स्त्री लोग के भाग्य पर अटूट विश्वास होला। ऊ जानेला लोग कि भगवान के जो कृपा होई तऽ कपार से बाँझिन नाम के कलंक मेटाऽ जाई। भोजपुरी सोहरन में भारी–से–भारी बिपतन में औरतन के धैर्य के रेखांकित कइल गइल बाऽ। कई जगह ई देखे के मिलेला कि अपने उमीर के औरतन के गोदी में नवजात के देख के दोसर औरत अपना संतानहीन भइला के व्यथा में आहत हो जाले। सोहर गीतन में तऽ बंध्या औरतन के दशा के अइसन वर्णन मिलेला कि पत्थरों के सीना के झँकझोर देलाऽ। ओह तरे के सोहर में सास के दुर्व्यवहारो के वर्णन मिलेला। एगो सोहर देखीं –

मचीआ बइठल मोरे सास,
सगरी गुन आगर हेऽ।

ए बहुअर,
उठऽ नाहीं पनीआ के जावहू
चुचुहिया एक बोलेले हेऽ।।

अपना बाँझपन से औरत एतना परेशान बिआ कि गंगा जी से जा के गोहार लगावत बिआ। एगो सोहर देखीं –

गंगाजी के ऊँच अररवा,
तेवइया एक रोलवे होऽ।
आरे गंगा, अपनी लहरिया हमके देतू तऽ
हम डुबि मरि जइति होऽ।।

पुत्र के जनम पर देवता आ पूर्वज लोग के गोहराऽ के ओह लोग के धन्यवाद ज्ञापन कइल होखे चाहे आशीष देबे के कामना होखे, चाहे वंश–वृद्धि के चर्चा, ईऽ सब देवता जगावल कहाला। पुत्र के प्राप्ति के इच्छा रखे वाली औरत, गर्भ के वेदना से व्याकुल तरुणी, पतोह के मंगल कामना में लागल सास, दौड़–दौड़ के धंगडिन बोलावे में व्यस्त पति देव, बेटा के जनमला पर धन–दौलत के नेग माँगे वाली मह. रीन, कूद–कूद के आपन उछाह लुटावत ननद आदि के वर्णन सोहर के गीतन में बहुते होला। नवजात के रोआई, माई के आनन्द, सास के प्रसन्नता आदि के वर्णन खेलवना के वर्ण्य–विषय हऽ। एह सब के अलग–अलग कइल कठिन होला। कुल मिलाके देवता उठावन के बाद बेटा के जनम के पूर्व–पीठिका के वर्णन सोहर में होला तऽ उत्तर–पीठिका के वर्णन खेलवना में।

भले समाज में परिवर्तन होऽ ताऽ, लोक–जीवन भी संस्कारन के चादर के समय–समय पर धोऽ के साफ–सुथरा करे के चाह राखता, आ करतो बाऽ। दुनिया विकास के पाँख लगा के लंबा उड़ान भर रहल बिआ। दूरी काऽ कहाला, ई तऽ बुझाते नइखे। अब तऽ सगरो सफर एगो क्लिक पर निर्भर हो गइल बाऽ। समाज में परिवर्तन के सथवे नित नया–नया आंदोलन के जनम होता। आधी आबादी के विशेषण पर नारी–मुक्ति के बात कइल जाता। तबो सोचे वाला बात ई बाऽ कि आजुओ बेटा के जनम उछाह के संचार करे में कवनो कसर नइखे छोड़त। भले समय के साथ चलत लोग–जीवन में भी लइका के जनम के सोहर अब सूतक–गृह से चल के नर्सिंग होम के बेड पर चल गइल बा, तबो अभीन कईगो ईया–नानी, कईगो फुआ–काकी बाऽ लोग जे संस्कारन के जीअवले बाऽ लोग। ऊ लोग जानत बाऽ लोग कि अपना डुबत संस्कारन के बचा के ही अपना वैभवशाली संस्कृति के समृद्ध कइल जा सकल जाला आ ढोल–नगाड़ा वाला गोलबाजी से दूर अपना असली भोजपुरिया के परिचय दिहल जा सकल जाला। काहे कि कवनो लोक–जीवन के लोक–साहित्य ओह लोक–मानस के हृदय के अभिव्यक्ति होला। लोक–साहित्य लोक–मानस के भावना के सँचका दर्पण आ प्रतीक होला। तऽ सबके सोचे के चाहीं कि हमनी के कहाँ बानी जाऽ, काऽ करऽ तानी जाऽ आ काऽ करे के चाहीं।

❑❑

❍ उत्तम नगर, नई दिल्ली

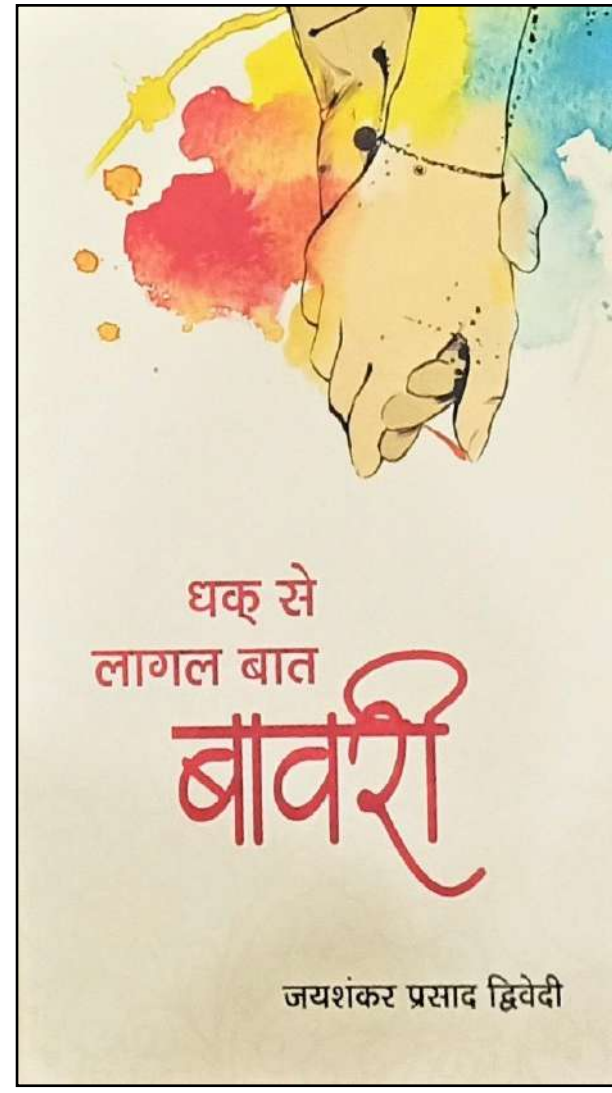

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन

दिल्ली प्रदेश इकाई

कार्यकारिणी

अध्यक्ष - डॉ. हरेराम पाठक / कार्यकारी अध्यक्ष - श्री जे.पी. द्विवेदी

उपाध्यक्ष - डॉ. मुन्ना के पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार माँझी, डॉ. गौतम चौबे

महामंत्री - श्री राजीव उपाध्याय / कोषाध्यक्ष - श्री शशि रंजन मिश्र

साहित्य मंत्री - श्री देवकांत पाण्डेय / कला-संस्कृति मंत्री - श्रीमती इंदु मिश्रा किरण

प्रकाशन मंत्री - श्री अखिलेश पाण्डेय / संगठन मंत्री - श्री लवकांत सिंह

प्रचार मंत्री - श्रीमती सरोज त्यागी / प्रबंध मंत्री - श्री सुनील कुमार सिन्हा

सदस्यगण : श्री मनोज दुबे, श्री अनूप श्रीवास्तव, श्री रितेश गोस्वामी

डॉ विनय भूषण, नवनीत मिश्र

अ अपनइत

(एगो डेग भोजपुरी साहित्य खातिर)

अध्यक्ष : **सरोज त्यागी** संयोजक : **जे.पी. द्विवेदी**

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

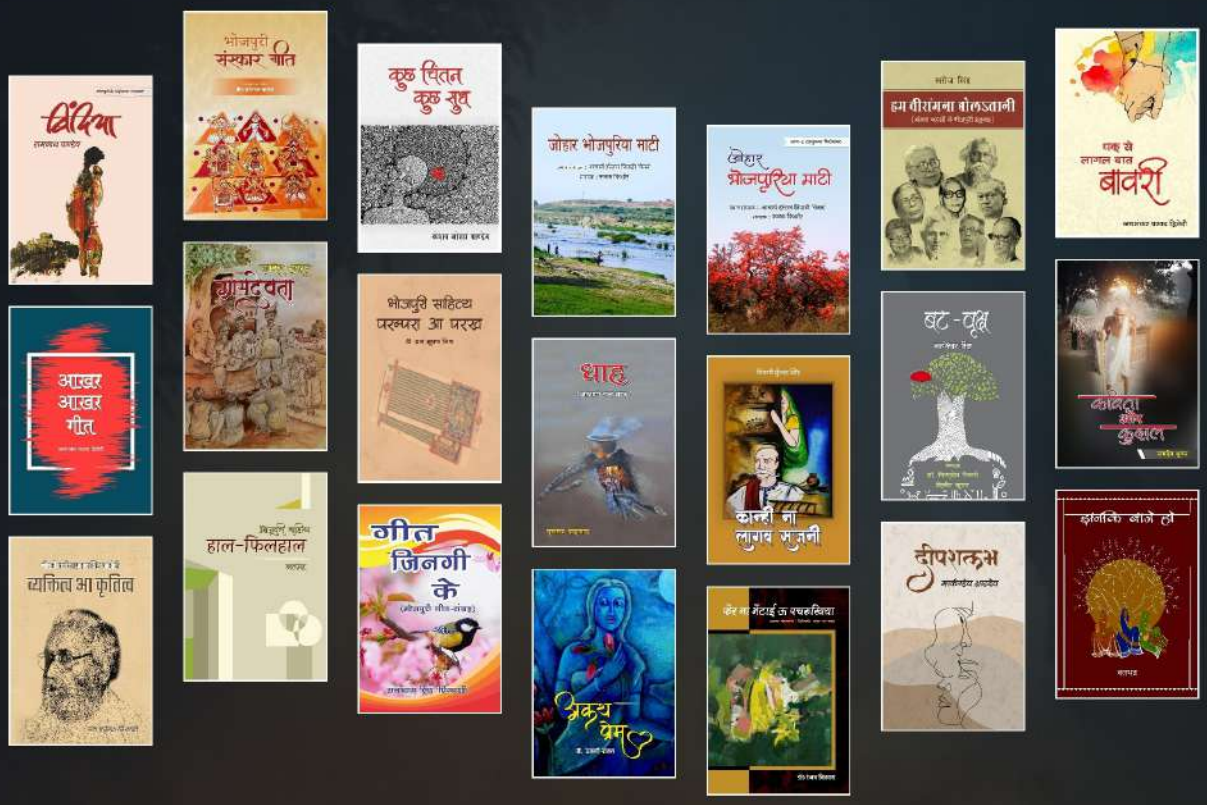

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

भोजपुरी साहित्य सरिता

सहित्यांगन

भोजपुरी के एक मात्र मासिक पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य सरिता' के सदस्यता के विवरण

सदस्यता शुल्क

आजीवन : 5100/- | संरक्षक : 11000

बैंक विवरण : ICICI Bank खाता संख्या – 157701513299

IFSC Code : ICIC0001577 (निखिल गौरव द्विवेदी)

रउरा 9999614657 पर paytm के माध्यम से पेमेंट कऽ के सदस्या ले सकेनी।

नोट : रउरा पेमेंट के बाद पावती अपना पूरा पता के साथ bhojpurissarita@gmail.com पर ई-मेल करे के पड़ी।